# قرآن مجید

## लफ़्ज़ी तरजुमा

# اِلَیْهِ یُرَدُّ

## पारा - 25

eParah

| اِلَيْهِ | يُرَدُّ | عِلْمُ | السَّاعَةِ ؕ | وَمَا | تَخْرُجُ | مِنْ ثَمَرٰتٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसी की तरफ़ | लौटाया जाता है | इल्म | क़यामत का | और नहीं | निकलता | फलों में से (कोई फल) |

| مِّنْ اَكْمَامِهَا | وَمَا | تَحْمِلُ | مِنْ اُنْثٰى | وَلَا | تَضَعُ | اِلَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अपने ग़िलाफ़ों में से | और नहीं | हामला होती | कोई मादा | और ना | वो जन्म देती है | मगर |

| بِعِلْمِهٖ ؕ | وَيَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | اَيْنَ | شُرَكَآءِىْ ۙ | قَالُوْٓا | اٰذَنّٰكَ ۙ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसके इल्म से | और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | कहां हैं | शरीक मेरे | वो कहेंगे | अर्ज़ कर चुके हैं हम तुझसे |

| مَا | مِنَّا | مِنْ شَهِيْدٍ (47) ۚ | وَضَلَّ | عَنْهُمْ | مَّا | كَانُوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नहीं है | हम में से | कोई गवाह | और गुम हो जाऐंगे | उनसे | जिन्हें | थे वो |

| يَدْعُوْنَ | مِنْ قَبْلُ | وَظَنُّوْا | مَا | لَهُمْ | مِّنْ مَّحِيْصٍ (48) | لَا يَسْئَمُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो पुकारते | इससे पहले | और वो समझ लेंगे | नहीं है | उनके लिए | कोई जाए पनाह | नहीं उकताता |

| الْاِنْسَانُ | مِنْ دُعَآءِ | الْخَيْرِ ۫ | وَاِنْ | مَّسَّهُ | الشَّرُّ | فَيَئُوْسٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इंसान | दुआ से | भलाई की | और अगर | पहुंचता है उसे | शर | तो निहायत मायूस |

| قَنُوْطٌ (49) | وَلَئِنْ | اَذَقْنٰهُ | رَحْمَةً | مِّنَّا | مِنْ بَعْدِ | ضَرَّآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बहुत नाउम्मीद (हो जाता है) | और अलबत्ता अगर | चखाते हैं हम उसे | कोई रहमत | अपनी तरफ़ से | बाद | तकलीफ़ के |

| مَسَّتْهُ | لَيَقُوْلَنَّ | هٰذَا | لِىْ ۙ | وَمَآ | اَظُنُّ | السَّاعَةَ | قَآئِمَةً ۙ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जो पहुंचती है उसे | अलबत्ता वो ज़रूर कहता है | ये | मेरे लिए है | और नहीं | मैं गुमान करता | क़यामत को | क़ायम होने वाली |

| وَّلَئِنْ | رُّجِعْتُ | اِلٰى رَبِّىْٓ | اِنَّ | لِىْ | عِنْدَهٗ | لَلْحُسْنٰى ۚ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और अलबत्ता अगर | लौटाया गया मैं | तरफ़ अपने रब के | यक़ीनन | मेरे लिए | उसके पास | अलबत्ता भलाई है |

| فَلَنُنَبِّئَنَّ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | بِمَا | عَمِلُوْا ۫ | وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ |
|---|---|---|---|---|---|
| पस अलबत्ता हम ज़रूर ख़बर देंगे | उन्हें जिन्होंने | कुफ़्र किया | उसकी जो | उन्होंने अमल किए | और अलबत्ता हम ज़रूर चखाऐंगे उन्हें |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اَعْرَضَ | عَلَى الْاِنْسَانِ | اَنْعَمْنَا | وَاِذَآ | مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ (50) |
| वो ऐराज़ करता है | इंसान पर | इनआम करते हैं हम | और जब | सख़्त अज़ाब में से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَرِيْضٍ (51) | فَذُوْ دُعَآءٍ | الشَّرُّ | مَسَّهُ | وَاِذَا | بِجَانِبِهٖ ج | وَنَا |
| लम्बी-चौड़ी | तो दुआ करने वाला हो जाता है | तकलीफ़ | पहुंचती है उसे | और जब | पहलू अपना | और वो फेर लेता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَفَرْتُمْ | ثُمَّ | مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ | كَانَ | اِنْ | اَرَءَيْتُمْ | قُلْ |
| कुफ़्र किया तुम ने | फिर | अल्लाह की तरफ़ से | है वो | अगर | क्या ग़ौर किया तुम ने | कह दीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَعِيْدٍ (52) | فِيْ شِقَاقٍ | هُوَ | مِمَّنْ | اَضَلُّ | مَنْ | بِهٖ |
| बहुत दूर की | मुख़ालिफ़त में है | वो | उससे जो | ज़्यादा भटका हुआ है | कौन | उसका |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَتَبَيَّنَ | حَتّٰى | وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ | فِي الْاٰفَاقِ | اٰيٰتِنَا | سَنُرِيْهِمْ |
| वाज़ेह हो जाएगा | यहां तक कि | और उनके नफ़्सों में | आफ़ाक़/अतराफ़ में | निशानियां अपनी | अनक़रीब हम दिखाऐंगे उन्हें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى | اَنَّهٗ | بِرَبِّكَ | يَكْفِ | اَوَلَمْ | الْحَقُّ ط | اَنَّهُ | لَهُمْ |
| ऊपर | कि बेशक वो | आपका रब (उस पर) | काफ़ी | क्या भला नहीं | हक़ है | कि बेशक वो | उनके लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ لِّقَآءِ | فِيْ مِرْيَةٍ | اِنَّهُمْ | اَلَآ | شَهِيْدٌ (53) | شَيْءٍ | كُلِّ |
| मुलाक़ात से | शक में हैं | बेशक वो | ख़बरदार | ख़ूब गवाह है | चीज़ के | हर |

ع 6 10 1

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مُّحِيْطٌ (54) ع | شَيْءٍ | بِكُلِّ | اِنَّهٗ | اَلَآ | رَبِّهِمْ ط |
| अहाता करने वाला है | चीज़ का | हर | बेशक वो | ख़बरदार | अपने रब की |

## رُكُوْعَاتُهَا: 5 — 62 سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ 42 — اٰيَاتُهَا: 53

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | وَاِلَى | اِلَيْكَ | يُوْحِيْٓ | كَذٰلِكَ | عٓسٓقٓ (2) | حٰمٓ (1) ج |
| उनके जो | और तरफ़ | तरफ़ आपके | वही करता है | इसी तरह | عٓسٓقٓ | حٰمٓ |

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلِكَ ۙ | اللّٰهُ | الْعَزِيْزُ | الْحَكِيْمُ ③ | لَهٗ | مَا | فِي السَّمٰوٰتِ |
| आपसे पहले थे | अल्लाह | जो बड़ा ज़बरदस्त है | ख़ूब हिक्मत वाला है | उसी के लिए है | जो | आसमानों में है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | فِي الْاَرْضِ ؕ | وَهُوَ | الْعَلِيُّ | الْعَظِيْمُ ④ | تَكَادُ | السَّمٰوٰتُ |
| और जो | ज़मीन में है | और वो | बहुत बुलंद है | बहुत बड़ा है | क़रीब है कि | आसमान |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَتَفَطَّرْنَ | مِنْ فَوْقِهِنَّ | وَالْمَلٰٓئِكَةُ | يُسَبِّحُوْنَ | بِحَمْدِ | رَبِّهِمْ |
| वो फट पड़ें | अपने ऊपर से | और फ़रिश्ते | वो तस्बीह करते हैं | साथ तारीफ़ के | अपने रब की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَسْتَغْفِرُوْنَ | لِمَنْ | فِي الْاَرْضِ ؕ | اَلَآ | اِنَّ | اللّٰهَ | هُوَ |
| और वो बख़्शिश मांगते हैं | उनके लिए जो | ज़मीन में हैं | ख़बरदार | बेशक | अल्लाह | वो ही है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْغَفُوْرُ | الرَّحِيْمُ ⑤ | وَالَّذِيْنَ | اتَّخَذُوْا | مِنْ دُوْنِهٖٓ | اَوْلِيَآءَ | اللّٰهُ |
| बहुत बख़्शने वाला | निहायत रहम करने वाला | और वो जिन्होंने | बना लिए | उसके सिवा | हिमायती/दोस्त | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَفِيْظٌ | عَلَيْهِمْ ۖ | وَمَآ | اَنْتَ | عَلَيْهِمْ | بِوَكِيْلٍ ⑥ | وَكَذٰلِكَ |
| ख़ूब निगहबान है | उन पर | और नहीं | आप | उन पर | कोई ज़िम्मेदार | और इसी तरह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْحَيْنَآ | اِلَيْكَ | قُرْاٰنًا | عَرَبِيًّا | لِّتُنْذِرَ | اُمَّ الْقُرٰى | وَمَنْ |
| वही किया हमने | तरफ़ आपके | क़ुरआन | अरबी | ताकि आप डराएं | मक्का वालों को | और उनको जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَوْلَهَا | وَتُنْذِرَ | يَوْمَ الْجَمْعِ | لَا رَيْبَ | فِيْهِ ؕ | فَرِيْقٌ | فِي الْجَنَّةِ |
| इर्द-गिर्द हैं उसके | और आप डराएं | जमा होने के दिन से | नहीं कोई शक | इसमें | एक गिरोह (होगा) | जन्नत में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَفَرِيْقٌ | فِي السَّعِيْرِ ⑦ | وَلَوْ | شَآءَ | اللّٰهُ | لَجَعَلَهُمْ | اُمَّةً |
| और एक गिरोह (होगा) | दोज़ख़ में | और अगर | चाहता | अल्लाह | अलबत्ता वो बना देता उन्हें | उम्मत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاحِدَةً | وَّلٰكِنْ | يُّدْخِلُ | مَنْ | يَّشَآءُ | فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ | وَالظّٰلِمُوْنَ |
| एक ही | और लेकिन | वो दाख़िल करता है | जिसे | वो चाहता है | अपनी रहमत में | और जो ज़ालिम हैं |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | لَهُمْ | مِّنْ وَّلِيٍّ | وَّلَا | نَصِيْرٍ ⑧ | اَمِ | اتَّخَذُوْا | مِنْ دُوْنِهٖٓ |
| नहीं | उनके लिए | कोई दोस्त | और ना | कोई मददगार | या | उन्होंने बना रखे हैं | उसके सिवा |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْلِيَآءَ ۚ | فَاللّٰهُ | هُوَ | الْوَلِيُّ | وَهُوَ | يُحْيِ | الْمَوْتٰى ۫ | وَهُوَ | عَلٰى |
| कारसाज़ | पस अल्लाह | वो ही है | कारसाज़ | और वो | वो ज़िंदा करेगा | मुर्दों को | और वो | ऊपर |

ع 1 9 2

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كُلِّ | شَيْءٍ | قَدِيْرٌ ⑨ ع | وَمَا | اخْتَلَفْتُمْ | فِيْهِ | مِنْ شَيْءٍ | فَحُكْمُهٗٓ |
| हर | चीज़ के | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | और जो भी | इख़्तिलाफ किया तुमने | उसमें | किसी चीज़ से | तो फ़ैसला उसका |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَى اللّٰهِ ؕ | ذٰلِكُمُ | اللّٰهُ | رَبِّيْ | عَلَيْهِ | تَوَكَّلْتُ ؕ | وَاِلَيْهِ |
| तरफ़ अल्लाह के है | ये है | अल्लाह | रब मेरा | इसी पर | तवक्कल किया मैंने | और इसी की तरफ़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اُنِيْبُ ⑩ | فَاطِرُ | السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ؕ | جَعَلَ | لَكُمْ | مِّنْ اَنْفُسِكُمْ |
| मैं रुजूअ करता हूं | पैदा करने वाला | आसमानों | और ज़मीन का | उसने बनाए | तुम्हारे लिए | तुम्हारे नफ़्सों से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَزْوَاجًا | وَّمِنَ الْاَنْعَامِ | اَزْوَاجًا ۚ | يَذْرَؤُكُمْ | فِيْهِ ؕ | لَيْسَ |
| जोड़े | और मवेशियों से | जोड़े | वो फैलाता है तुम्हें | इसमें | नहीं है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَمِثْلِهٖ | شَيْءٌ ۚ | وَهُوَ | السَّمِيْعُ | الْبَصِيْرُ ⑪ | لَهٗ | مَقَالِيْدُ |
| उसकी मानिंद | कोई चीज़ | और वो | ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब देखने वाला है | उसी के लिए हैं | कुंजियां |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ۚ | يَبْسُطُ | الرِّزْقَ | لِمَنْ | يَّشَآءُ | وَيَقْدِرُ ؕ |
| आसमानों | और ज़मीन की | वो फैलाता है | रिज़्क़ | जिसके लिए | वो चाहता है | और वो तंग कर देता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّهٗ | بِكُلِّ | شَيْءٍ | عَلِيْمٌ ⑫ | شَرَعَ | لَكُمْ | مِّنَ الدِّيْنِ |
| बेशक वो | हर | चीज़ को | ख़ूब जानने वाला है | उसने मुक़र्रर किया | तुम्हारे लिए | दीन में से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | وَصّٰى | بِهٖ | نُوْحًا | وَّالَّذِيْٓ | اَوْحَيْنَآ | اِلَيْكَ | وَمَا |
| वो जो | उसने वसीयत की | उसकी | नूह को | और वो जो | वही की हमने | तरफ़ आपके | और वो जो |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| وَصَّيْنَا | بِهٖٓ | اِبْرٰهِيْمَ | وَمُوْسٰى | وَعِيْسٰٓى | اَنْ | اَقِيْمُوا | الدِّيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वसीयत की हमने | उसकी | इब्राहीम | और मूसा | और ईसा को | कि | क़ायम करो | दीन को |

| وَلَا | تَتَفَرَّقُوْا | فِيْهِ ؕ | كَبُرَ | عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ | مَا | تَدْعُوْهُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और ना | तुम तफ़रक़ा डालो | इसमें | बड़ा (भारी) है | मुशरिकों पर | जो | तुम बुलाते हो उन्हें |

| اِلَيْهِ ؕ | اَللّٰهُ | يَجْتَبِيْٓ | اِلَيْهِ | مَنْ | يَّشَآءُ | وَيَهْدِيْٓ | اِلَيْهِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ उसके | अल्लाह | वो चुन लेता है | अपनी तरफ़ | जिसे | वो चाहता है | और वो हिदायत देता है | अपनी तरफ़ |

| مَنْ | يُّنِيْبُ ⑬ | وَمَا | تَفَرَّقُوْٓا | اِلَّا | مِنْۢ بَعْدِ | مَا | جَآءَهُمُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसे जो | रुजूअ करता है | और नहीं | उन्होंने तफ़रक़ा डाला | मगर | बाद इसके | जो | आ गया उनके पास |

| الْعِلْمُ | بَغْيًۢا | بَيْنَهُمْ ؕ | وَلَوْلَا | كَلِمَةٌ | سَبَقَتْ | مِنْ رَّبِّكَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इल्म | सरकशी की वजह से | आपस में | अगर ना होती | एक बात | जो पहले गुज़र चुकी | आपके रब की तरफ़ से |

| اِلٰٓى اَجَلٍ | مُّسَمًّى | لَّقُضِيَ | بَيْنَهُمْ ؕ | وَاِنَّ | الَّذِيْنَ | اُوْرِثُوا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एक वक़्त तक | मुक़र्रर | अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता | दर्मियान उनके | और बेशक | वो लोग जो | वारिस बनाए गए |

| الْكِتٰبَ | مِنْۢ بَعْدِهِمْ | لَفِيْ شَكٍّ | مِّنْهُ | مُرِيْبٍ ⑭ | فَلِذٰلِكَ |
|---|---|---|---|---|---|
| किताब के | उनके बाद | अलबत्ता शक में हैं | उसकी तरफ़ से | जो बेचैन करने वाला है | तो उसी (दीन) के लिए |

| فَادْعُ ۚ | وَاسْتَقِمْ | كَمَآ | اُمِرْتَ ۚ | وَلَا | تَتَّبِعْ | اَهْوَآءَهُمْ ۚ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस दावत दीजिए | और क़ायम रहिए | जैसा कि | हुक्म दिए गए आप | और ना | आप पैरवी कीजिए | उनकी ख़्वाहिशात की |

| وَقُلْ | اٰمَنْتُ | بِمَآ | اَنْزَلَ | اللّٰهُ | مِنْ كِتٰبٍ ۚ | وَاُمِرْتُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और कह दीजिए | ईमान लाया मैं | उस पर जो | नाज़िल किया | अल्लाह ने | किताब से | और हुक्म दिया गया है मुझे |

| لِاَعْدِلَ | بَيْنَكُمْ ؕ | اَللّٰهُ | رَبُّنَا | وَرَبُّكُمْ ؕ | لَنَآ | اَعْمَالُنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कि मैं अदल करूं | दर्मियान तुम्हारे | अल्लाह ही | रब है हमारा | और रब तुम्हारा | हमारे लिए | आमाल हमारे |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَكُمْ | اَعْمَالُكُمْ ؕ | لَا حُجَّةَ | بَيْنَنَا | وَبَيْنَكُمْ ؕ | اَللّٰهُ | يَجْمَعُ |
| और तुम्हारे लिए | आमाल तुम्हारे | नहीं कोई झगड़ा | दर्मियान हमारे | और दर्मियान तुम्हारे | अल्लाह | वो जमा कर देगा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَيْنَنَا ۚ | وَاِلَيْهِ | الْمَصِيْرُ ﴿15﴾ ؕ | وَالَّذِيْنَ | يُحَآجُّوْنَ | فِي اللّٰهِ | مِنْۢ بَعْدِ |
| हमें आपस में | और तरफ़ उसी के | लौटना है | और वो जो | झगड़ते हैं | अल्लाह के बारे में | बाद इसके |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | اسْتُجِيْبَ | لَهٗ | حُجَّتُهُمْ | دَاحِضَةٌ | عِنْدَ | رَبِّهِمْ | وَعَلَيْهِمْ |
| जो | क़ुबूल कर लिया गया | उसके लिए | हुज्जत/दलील उनकी | ज़ाइल होने वाली है | नज़दीक | उनके रब के | और उन पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| غَضَبٌ | وَّلَهُمْ | عَذَابٌ | شَدِيْدٌ ﴿16﴾ | اَللّٰهُ | الَّذِيْٓ | اَنْزَلَ | الْكِتٰبَ |
| ग़ज़ब है | और उनके लिए | अज़ाब है | सख़्त | अल्लाह | वो है जिसने | नाज़िल किया | किताब को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالْحَقِّ | وَالْمِيْزَانَ ؕ | وَمَا | يُدْرِيْكَ | لَعَلَّ | السَّاعَةَ | قَرِيْبٌ ﴿17﴾ |
| साथ हक़ के | और मीज़ान को | और क्या चीज़ | बताए आपको | शायद कि | क़यामत | क़रीब हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَسْتَعْجِلُ | بِهَا | الَّذِيْنَ | لَا يُؤْمِنُوْنَ | بِهَا ۚ | وَالَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا |
| जल्दी मांगते हैं | उसे | वो जो | नहीं वो ईमान लाते | इस पर | और वो जो | ईमान लाए हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُشْفِقُوْنَ | مِنْهَا ۙ | وَيَعْلَمُوْنَ | اَنَّهَا | الْحَقُّ ؕ | اَلَآ | اِنَّ | الَّذِيْنَ |
| डरने वाले हैं | उससे | और वो इल्म रखते हैं | कि बेशक वो | हक़ है | ख़बरदार | बेशक | वो जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُمَارُوْنَ | فِي السَّاعَةِ | لَفِيْ ضَلٰلٍ | بَعِيْدٍ ﴿18﴾ | اَللّٰهُ | لَطِيْفٌۢ | بِعِبَادِهٖ |
| झगड़ते हैं | क़यामत के बारे में | अलबता गुमराही में हैं | दूर की | अल्लाह | बहुत मेहरबान है | अपने बंदों पर |

ع 2 10 3

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَرْزُقُ | مَنْ | يَّشَآءُ ۚ | وَهُوَ | الْقَوِيُّ | الْعَزِيْزُ ﴿19﴾ ع | مَنْ | كَانَ |
| वो रिज़्क़ देता है | जिसे | वो चाहता है | और वो | बहुत क़ुव्वत वाला है | ख़ूब ग़लबे वाला है | जो कोई | है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُرِيْدُ | حَرْثَ | الْاٰخِرَةِ | نَزِدْ | لَهٗ | فِيْ حَرْثِهٖ ۚ | وَمَنْ | كَانَ |
| चाहता | खेती | आख़िरत की | हम ज़्यादा कर देंगे | उसके लिए | उसकी खेती में | और जो कोई | है |

© HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| يُرِيْدُ | حَرْثَ | الدُّنْيَا | نُؤْتِهٖ | مِنْهَا | وَمَا | لَهٗ | فِي الْاٰخِرَةِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चाहता | खेती | दुनिया की | हम देते हैं उसे | उसमें से | और नहीं होगा | उसके लिए | आख़िरत में |

| مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿20﴾ | اَمْ | لَهُمْ | شُرَكٰٓؤُا | شَرَعُوْا | لَهُمْ |
|---|---|---|---|---|---|
| कोई हिस्सा | या | उनके लिए | कुछ शरीक हैं | उन्होंने मुक़र्रर कर दिया | उनके लिए |

| مِّنَ الدِّيْنِ | مَا | لَمْ | يَاْذَنْ | بِهِ | اللّٰهُ ؕ | وَلَوْلَا | كَلِمَةُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दीन में से | वो जो | नहीं | इजाज़त दी | उसकी | अल्लाह ने | और अगर ना होती | बात |

| الْفَصْلِ | لَقُضِيَ | بَيْنَهُمْ ؕ | وَاِنَّ | الظّٰلِمِيْنَ | لَهُمْ | عَذَابٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ैसले की | अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता | दर्मियान उनके | और बेशक | ज़ालिम लोग | उनके लिए | अज़ाब है |

| اَلِيْمٌ ﴿21﴾ | تَرَى | الظّٰلِمِيْنَ | مُشْفِقِيْنَ | مِمَّا | كَسَبُوْا | وَهُوَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्दनाक | आप देखेंगे | ज़ालिमों को | डरने वाले होंगे | उससे जो | उन्होंने कमाई की | और वो |

| وَاقِعٌۢ | بِهِمْ ؕ | وَالَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ | فِيْ رَوْضٰتِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वाक़ेअ होने वाला है | उन पर | और वो जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक | बाग़ों में होंगे |

| الْجَنّٰتِ ۚ | لَهُمْ | مَّا | يَشَآءُوْنَ | عِنْدَ | رَبِّهِمْ ؕ | ذٰلِكَ | هُوَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्नतों के | उनके लिए होगा | जो | वो चाहेंगे | पास | उनके रब के | यही | वो |

| الْفَضْلُ | الْكَبِيْرُ ﴿22﴾ | ذٰلِكَ | الَّذِيْ | يُبَشِّرُ | اللّٰهُ | عِبَادَهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फ़ज़्ल है | बहुत बड़ा | ये वो ही है | जिसकी | ख़ुशख़बरी देता है | अल्लाह | अपने बंदों को |

| الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ ؕ | قُلْ | لَّآ | اَسْـَٔلُكُمْ | عَلَيْهِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक | कह दीजिए | नहीं | मैं मांगता तुम से | इस पर |

| اَجْرًا | اِلَّا | الْمَوَدَّةَ | فِي الْقُرْبٰى ؕ | وَمَنْ | يَّقْتَرِفْ | حَسَنَةً |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई अजर | सिवाए | मोहब्बत के | क़राबतदारी में | और जो कोई | कमाएगा | कोई नेकी |

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| نَّزِدْ | لَهٗ | فِيْهَا | حُسْنًا ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | غَفُوْرٌ | شَكُوْرٌ ﴿23﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम ज़्यादा कर देंगे | उसके लिए | उसमें | ख़ूबी को | बेशक | अल्लाह | बहुत बख़्शने वाला | ख़ूब क़द्रदान है |

| اَمْ | يَقُوْلُوْنَ | افْتَرٰى | عَلَى اللّٰهِ | كَذِبًا ۚ | فَاِنْ | يَّشَاِ | اللّٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| या | वो कहते है | उसने गढ़ लिया | अल्लाह पर | झूठ | फिर अगर | चाहता | अल्लाह |

| يَخْتِمْ | عَلٰى قَلْبِكَ ؕ | وَيَمْحُ | اللّٰهُ | الْبَاطِلَ | وَيُحِقُّ | الْحَقَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो मोहर लगा देता | आपके दिल पर | और जल्द मिटा देता है | अल्लाह | बातिल को | और वो हक़ कर दिखाता है | हक़ को |

| بِكَلِمٰتِهٖ ؕ | اِنَّهٗ | عَلِيْمٌۢ | بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿24﴾ | وَهُوَ | الَّذِىْ |
|---|---|---|---|---|---|
| अपने कलिमात से | बेशक वो | ख़ूब जानने वाला है | सीनों वाले (भेद) | और वो ही है | जो |

| يَقْبَلُ | التَّوْبَةَ | عَنْ عِبَادِهٖ | وَيَعْفُوْا | عَنِ السَّيِّاٰتِ | وَيَعْلَمُ |
|---|---|---|---|---|---|
| क़ुबूल करता है | तौबा | अपने बंदों से | और वो दरगुज़र करता है | बुराईयों से | और वो जानता है |

| مَا | تَفْعَلُوْنَ ﴿25﴾ لا | وَيَسْتَجِيْبُ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | तुम करते हो | और वो (दुआ) क़ुबूल करता है | उनकी जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक |

| وَيَزِيْدُهُمْ | مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ | وَالْكٰفِرُوْنَ | لَهُمْ | عَذَابٌ | شَدِيْدٌ ﴿26﴾ |
|---|---|---|---|---|---|
| और वो ज़्यादा देता है उन्हें | अपने फ़ज़्ल से | और जो काफ़िर हैं | उनके लिए | अज़ाब है | शदीद |

| وَلَوْ | بَسَطَ | اللّٰهُ | الرِّزْقَ | لِعِبَادِهٖ | لَبَغَوْا | فِى الْاَرْضِ | وَلٰكِنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर | खोल दे | अल्लाह | रिज़्क़ | अपने बंदों के लिए | अलबत्ता वो सरकशी करें | ज़मीन में | और लेकिन |

| يُّنَزِّلُ | بِقَدَرٍ | مَّا | يَشَآءُ ؕ | اِنَّهٗ | بِعِبَادِهٖ | خَبِيْرٌۢ | بَصِيْرٌ ﴿27﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो उतारता है | साथ एक अंदाज़े के | जो | वो चाहता है | बेशक वो | अपने बंदों से | ख़ूब बाख़बर है | ख़ूब देखने वाला है |

| وَهُوَ | الَّذِىْ | يُنَزِّلُ | الْغَيْثَ | مِنْ بَعْدِ | مَا | قَنَطُوْا | وَيَنْشُرُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और वो ही है | जो | उतारता है | बारिश को | इसके बाद | जो | वो मायूस हो गए | और वो फैला देता है |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَحْمَتَهٗ ؕ | وَهُوَ | الْوَلِيُّ | الْحَمِيْدُ ﴿28﴾ | وَمِنْ اٰيٰتِهٖ | خَلْقُ | السَّمٰوٰتِ |
| अपनी रहमत को | और वो ही | मददगार है | बहुत तारीफ़ वाला है | और उसकी निशानियों में से है | पैदाइश | आसमानों की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضِ | وَمَا | بَثَّ | فِيْهِمَا | مِنْ دَآبَّةٍ ؕ | وَهُوَ | عَلٰى جَمْعِهِمْ |
| और ज़मीन की | और जो भी | उसने फैला दिए | इन दोनों में | कोई जानदार | और वो | उनके जमा करने पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِذَا | يَشَآءُ | قَدِيْرٌ ﴿29﴾ ع | وَمَآ | اَصَابَكُمْ | مِّنْ مُّصِيْبَةٍ | فَبِمَا |
| जब | वो चाहे | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | और जो भी | पहुंची तुम्हें | कोई मुसीबत | पस बवजह उसके जो |

ع 3 10 4

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَسَبَتْ | اَيْدِيْكُمْ | وَيَعْفُوْا | عَنْ كَثِيْرٍ ﴿30﴾ ؕ | وَمَآ | اَنْتُمْ |
| कमाई की | तुम्हारे हाथों ने | और वो दरगुज़र करता है | बहुत कुछ से | और नहीं | तुम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمُعْجِزِيْنَ | فِى الْاَرْضِ ۚ | وَمَا | لَكُمْ | مِّنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | مِنْ وَّلِيٍّ |
| आजिज़ करने वाले | ज़मीन में | और नहीं | तुम्हारे लिए | सिवाए | अल्लाह के | कोई दोस्त |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَّلَا | نَصِيْرٍ ﴿31﴾ | وَمِنْ اٰيٰتِهِ | الْجَوَارِ | فِى الْبَحْرِ | كَالْاَعْلَامِ ﴿32﴾ ؕ |
| और ना | कोई मददगार | और उसकी निशानियों में से हैं | कश्तियाँ | समुन्दर में | पहाड़ों की तरह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنْ | يَّشَاْ | يُسْكِنِ | الرِّيْحَ | فَيَظْلَلْنَ | رَوَاكِدَ | عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ | اِنَّ |
| अगर | वो चाहे | वो साकिन कर दे | हवा को | तो वो रह जाऐं | खड़ी हुई | उसकी पुश्त पर | यक़ीनन |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِىْ ذٰلِكَ | لَاٰيٰتٍ | لِّكُلِّ | صَبَّارٍ | شَكُوْرٍ ﴿33﴾ ۙ | اَوْ | يُوْبِقْهُنَّ |
| इसमें | अलबत्ता निशानियां हैं | वास्ते हर | बहुत सब्र करने वाले | बहुत शुक्र गुज़ार के | या | वो हलाक कर दे उन्हें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | كَسَبُوْا | وَيَعْفُ | عَنْ كَثِيْرٍ ﴿34﴾ ۙ | وَّيَعْلَمَ | الَّذِيْنَ |
| बवजह उसके जो | उन्होंने कमाई की | और वो दरगुज़र कर दे | बहुत सों से | और (ताकि) जान लें | वो लोग जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُجَادِلُوْنَ | فِىْٓ اٰيٰتِنَا ؕ | مَا | لَهُمْ | مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿35﴾ | فَمَآ | اُوْتِيْتُمْ |
| झगड़ते हैं | हमारी आयात में | नहीं | उनके लिए | कोई जाए पनाह | पस जो भी | दिए गए हो तुम |

INTERNATIONAL HUMANITARIAN WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ شَيْءٍ | فَمَتَاعُ | الْحَيٰوةِ | الدُّنْيَا ۚ | وَمَا | عِنْدَ | اللّٰهِ | خَيْرٌ |
| कोई चीज़ | तो सामान है | ज़िन्दगी का | दुनिया की | और जो | पास है | अल्लाह के | बेहतर है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَّاَبْقٰى | لِلَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَلٰى رَبِّهِمْ | يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ ﴿36﴾ | وَالَّذِيْنَ |
| और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है | उनके लिए जो | ईमान लाए | और अपने रब पर ही | वो तवक्कल करते हैं | और वो जो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَجْتَنِبُوْنَ | كَبٰٓئِرَ | الْاِثْمِ | وَالْفَوَاحِشَ | وَاِذَا مَا | غَضِبُوْا |
| इज्तिनाब करते हैं | कबीरा | गुनाहों से | और बेहयाई के कामों से | और जब भी | वो ग़ज़बनाक होते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هُمْ | يَغْفِرُوْنَ ﴿37﴾ ۚ | وَالَّذِيْنَ | اسْتَجَابُوْا | لِرَبِّهِمْ | وَاَقَامُوا | الصَّلٰوةَ ۪ |
| वो | वो माफ़ कर देते हैं | और वो जिन्होंने | लब्बैक कही | अपने रब के लिए | और उन्होंने क़ायम की | नमाज़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَمْرُهُمْ | شُوْرٰى | بَيْنَهُمْ ۪ | وَمِمَّا | رَزَقْنٰهُمْ | يُنْفِقُوْنَ ﴿38﴾ ۚ | |
| और काम उनका | मशवरा करना है | आपस में | और उसमें से जो | रिज़्क़ दिया हमने उन्हें | वो ख़र्च करते हैं | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالَّذِيْنَ | اِذَآ | اَصَابَهُمُ | الْبَغْيُ | هُمْ | يَنْتَصِرُوْنَ ﴿39﴾ | وَجَزٰٓؤُا |
| और वो जो | जब | पहुँचती है उन्हें | कोई ज़्यादती | वो | बदला लेते हैं | और बदला |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَيِّئَةٍ | سَيِّئَةٌ | مِّثْلُهَا ۚ | فَمَنْ | عَفَا | وَاَصْلَحَ | فَاَجْرُهٗ |
| बुराई का | बुराई है | उसकी मिसल | पस जो कोई | माफ़ कर दे | और वो इस्लाह करे | तो अजर उसका |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى اللّٰهِ ؕ | اِنَّهٗ | لَا يُحِبُّ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿40﴾ | وَلَمَنِ | انْتَصَرَ | بَعْدَ |
| ज़िम्मे है अल्लाह के | बेशक वो | नहीं वो मोहब्बत करता | ज़ालिमों से | और अलबत्ता जो कोई | बदला ले | बाद |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ظُلْمِهٖ | فَاُولٰٓئِكَ | مَا | عَلَيْهِمْ | مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿41﴾ ؕ | اِنَّمَا | السَّبِيْلُ |
| अपने (ऊपर) ज़ुल्म के | तो यही लोग हैं | नहीं | उन पर | कोई मुआख़िज़ा | बेशक | मुआख़िज़ा तो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى الَّذِيْنَ | يَظْلِمُوْنَ | النَّاسَ | وَيَبْغُوْنَ | فِى الْاَرْضِ | بِغَيْرِ | الْحَقِّ ؕ |
| उन पर है जो | ज़ुल्म करते हैं | लोगों पर | और वो बग़ावत करते हैं | ज़मीन में | बग़ैर | हक़ के |

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION AL HUDA

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُولٰٓئِكَ | لَهُمْ | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ (42) | وَلَمَنْ | صَبَرَ | وَغَفَرَ | اِنَّ |
| यही लोग हैं | उनके लिए | अज़ाब है | दर्दनाक | और अलबत्ता जिसने | सब्र किया | और उसने माफ़ कर दिया | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذٰلِكَ | لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (43) ع | وَمَنْ | يُّضْلِلِ | اللّٰهُ | فَمَا | لَهٗ |
| ये | अलबत्ता हिम्मत के कामों से है | और जिसे | भटका दे | अल्लाह | तो नहीं | उसके लिए |

ع 4 14 5

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ وَّلِيٍّ | مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ | وَتَرَى | الظّٰلِمِيْنَ | لَمَّا | رَاَوُا | الْعَذَابَ |
| कोई कारसाज़ | इसके बाद | और आप देखेंगे | ज़ालिमों को | जब | वो देख लेंगे | अज़ाब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَقُوْلُوْنَ | هَلْ | اِلٰى مَرَدٍّ | مِّنْ سَبِيْلٍ (44) ج | وَتَرٰىهُمْ | يُعْرَضُوْنَ |
| वो कहेंगे | क्या है | वापस लौटने की तरफ़ | कोई रास्ता | और आप देखेंगे उन्हें | वो पेश किए जाएंगे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهَا | خٰشِعِيْنَ | مِنَ الذُّلِّ | يَنْظُرُوْنَ | مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ | وَقَالَ |
| उस पर | झुके हुए | ज़िल्लत की वजह से | वो देखेंगे | छुपी आंख/कनअंखियों से | और कहेंगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْٓا | اِنَّ | الْخٰسِرِيْنَ | الَّذِيْنَ | خَسِرُوْٓا | اَنْفُسَهُمْ |
| वो लोग जो | ईमान लाए | बेशक | ख़सारा पाने वाले | वो हैं जिन्होंने | ख़सारे में डाला | अपने नफ़्सों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَهْلِيْهِمْ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ ؕ | اَلَآ | اِنَّ | الظّٰلِمِيْنَ | فِيْ عَذَابٍ |
| और अपने घर वालों को | दिन | क़यामत के | ख़बरदार | बेशक | ज़ालिम लोग | अज़ाब में होंगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّقِيْمٍ (45) | وَمَا | كَانَ | لَهُمْ | مِّنْ اَوْلِيَآءَ | يَنْصُرُوْنَهُمْ | مِّنْ دُوْنِ |
| मुक़ीम/दाइमी | और ना | होंगे | उनके लिए | कोई मददगार | जो मदद करें उनकी | सिवाए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ ؕ | وَمَنْ | يُّضْلِلِ | اللّٰهُ | فَمَا | لَهٗ | مِنْ سَبِيْلٍ (46) ؕ | اِسْتَجِيْبُوْا |
| अल्लाह के | और जिसे | भटका दे | अल्लाह | तो नहीं | उसके लिए | कोई रास्ता | लब्बैक कहो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِرَبِّكُمْ | مِّنْ قَبْلِ | اَنْ | يَّاْتِيَ | يَوْمٌ | لَّا مَرَدَّ | لَهٗ | مِنَ اللّٰهِ ؕ |
| अपने रब के लिए | इससे पहले | कि | आ जाए | एक दिन | नहीं टलना | उसके लिए | अल्लाह की तरफ़ से |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | لَكُمْ | مِّنْ مَّلْجَاٍ | يَّوْمَئِذٍ | وَّمَا | لَكُمْ | مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿47﴾ |
| नहीं | तुम्हारे लिए | कोई जाए पनाह | उस दिन | और नहीं | तुम्हारे लिए | कोई इंकार करना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِنْ | اَعْرَضُوْا | فَمَآ | اَرْسَلْنٰكَ | عَلَيْهِمْ | حَفِيْظًا ؕ | اِنْ | عَلَيْكَ |
| फिर अगर | वो ऐराज़ करें | तो नहीं | भेजा हमने आपको | उन पर | निगहबान बनाकर | नहीं | आपके ज़िम्मे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | الْبَلٰغُ ؕ | وَاِنَّآ | اِذَآ | اَذَقْنَا | الْاِنْسَانَ | مِنَّا | رَحْمَةً |
| मगर | पहुंचा देना | और बेशक हम | जब | चखाते हैं हम | इंसान को | अपनी तरफ़ से | कोई रहमत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَرِحَ | بِهَا ۚ | وَاِنْ | تُصِبْهُمْ | سَيِّئَةٌ | بِمَا | قَدَّمَتْ |
| वो ख़ुश हो जाता है | उस पर | और अगर | पहुंचती है उन्हें | कोई तकलीफ़ | बवजह उसके जो | आगे भेजा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَيْدِيْهِمْ | فَاِنَّ | الْاِنْسَانَ | كَفُوْرٌ ﴿48﴾ | لِلّٰهِ | مُلْكُ | السَّمٰوٰتِ |
| उनके हाथों ने | तो बेशक | इंसान | सख़्त नाशुक्रा है | अल्लाह ही के लिए है | बादशाहत | आसमानों |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضِ ؕ | يَخْلُقُ | مَا | يَشَآءُ ؕ | يَهَبُ | لِمَنْ | يَّشَآءُ |
| और ज़मीन की | वो पैदा करता है | जो | वो चाहता है | वो अता करता है | जिसके लिए | वो चाहता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّيَهَبُ | لِمَنْ | يَّشَآءُ | الذُّكُوْرَ ﴿49﴾ | اَوْ | يُزَوِّجُهُمْ | ذُكْرَانًا |
| और वो अता करता है | जिसके लिए | वो चाहता है | लड़के | या | वो मिला-जुला कर देता है उन्हें | लड़के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاِنَاثًا ۚ | وَيَجْعَلُ | مَنْ | يَّشَآءُ | عَقِيْمًا ؕ | اِنَّهٗ | عَلِيْمٌ |
| और लड़कियां | और वो बना देता है | जिसे | वो चाहता है | बांझ | बेशक वो | ख़ूब इल्म वाला है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَدِيْرٌ ﴿50﴾ | وَمَا | كَانَ | لِبَشَرٍ | اَنْ | يُّكَلِّمَهُ | اللّٰهُ | اِلَّا |
| ख़ूब क़ुदरत वाला है | और नहीं | है | किसी इंसान के लिए | कि | कलाम करे उससे | अल्लाह | मगर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَحْيًا | اَوْ | مِنْ وَّرَآئِ | حِجَابٍ | اَوْ | يُرْسِلَ | رَسُوْلًا | فَيُوْحِيَ |
| वही के तौर पर | या | पीछे से | पर्दे के | या | वो भेजे | कोई रसूल (फ़रिश्ता) | तो वो वही पहुंचाता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاِذْنِهٖ | مَا | يَشَآءُ ؕ | اِنَّهٗ | عَلِيٌّ | حَكِيْمٌ 51 | وَ كَذٰلِكَ |
| उसके इज़्न से | जो | वो चाहता है | यक़ीनन वो | बहुत बुलंद है | ख़ूब हिकमत वाला है | और इसी तरह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْحَيْنَآ | اِلَيْكَ | رُوْحًا | مِّنْ اَمْرِنَا ؕ | مَا | كُنْتَ | تَدْرِيْ |
| वही की हमने | आपकी तरफ़ | एक रूह (क़ुरआन) की | अपने हुक्म से | ना | थे आप | आप जानते |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | الْكِتٰبُ | وَلَا | الْاِيْمَانُ | وَلٰكِنْ | جَعَلْنٰهُ | نُوْرًا | نَّهْدِيْ |
| क्या है | किताब | और ना | ईमान | और लेकिन | बनाया हमने उसे | ऐसा नूर | हम हिदायत देते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖ | مَنْ | نَّشَآءُ | مِنْ عِبَادِنَا ؕ | وَ اِنَّكَ | لَتَهْدِيْٓ | اِلٰى صِرَاطٍ |
| साथ इसके | जिसे | हम चाहते हैं | अपने बंदों में से | और बेशक आप | अलबत्ता रहनुमाई करते हैं | तरफ़ रास्ते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّسْتَقِيْمٍ 52 ۙ | صِرَاطِ | اللّٰهِ | الَّذِيْ | لَهٗ | مَا | فِي السَّمٰوٰتِ |
| सीधे के | रास्ता | अल्लाह का | वो जो | उसी के लिए है | जो कुछ | आसमानों में है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | فِي الْاَرْضِ ؕ | اَلَآ | اِلَى اللّٰهِ | تَصِيْرُ | الْاُمُوْرُ 53 ع | ع 5 10 6 |
| और जो कुछ | ज़मीन में है | ख़बरदार | तरफ़ अल्लाह ही के | लौटते हैं | तमाम मामलात | |

اٰيَاتُهَا: 89 — 43 سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ 63 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حٰمٓ 1 ۚ | وَالْكِتٰبِ | الْمُبِيْنِ 2 ۙ | اِنَّا | جَعَلْنٰهُ | قُرْءٰنًا | عَرَبِيًّا | ربع 11 |
| حٰمٓ | क़सम है किताब | वाज़ेह की | बेशक हमने | बनाया हमने उसे | क़ुरआन | अरबी | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَّعَلَّكُمْ | تَعْقِلُوْنَ 3 ۚ | وَ اِنَّهٗ | فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ | لَدَيْنَا | لَعَلِيٌّ |
| ताकि तुम | तुम समझ सको | और बेशक वो | असल किताब में है | हमारे पास | अलबत्ता बहुत बुलंद है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَكِيْمٌ 4 ؕ | اَفَنَضْرِبُ | عَنْكُمُ | الذِّكْرَ | صَفْحًا | اَنْ | كُنْتُمْ |
| हिक्मत से लबरेज़ है | क्या फिर हम रोक लें | तुम से | इस नसीहत को | ऐराज़ करते हुए | कि | हो तुम |

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فِى الْاَوَّلِيْنَ ⑥ | مِنْ نَّبِىٍّ | اَرْسَلْنَا | وَكَمْ | مُّسْرِفِيْنَ ⑤ | قَوْمًا |
| पहलों में | नबियों में से | भेजे हमने | और कितने ही | हद से बढ़ने वाले | लोग |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑦ | بِهٖ | كَانُوْا | اِلَّا | مِّنْ نَّبِىٍّ | يَاْتِيْهِمْ | وَمَا |
| वो मज़ाक़ उड़ाते | उसका | थे वो | मगर | कोई नबी | आया उनके पास | और नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْاَوَّلِيْنَ ⑧ | مَثَلُ | وَّمَضٰى | بَطْشًا | مِنْهُمْ | اَشَدَّ | فَاَهْلَكْنَآ |
| पहलों की | मिसाल | और गुज़र चुकी | पकड़ में | उनमें से | सबसे शदीद को | तो हलाक कर दिया हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَيَقُوْلُنَّ | وَالْاَرْضَ | السَّمٰوٰتِ | خَلَقَ | مَّنْ | سَاَلْتَهُمْ | وَلَئِنْ |
| अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे | और ज़मीन को | आसमानों | पैदा किया | किसने | पूछें आप उनसे | और अलबत्ता अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْاَرْضَ | لَكُمُ | جَعَلَ | الَّذِىْ | الْعَلِيْمُ ⑨ لا | الْعَزِيْزُ | خَلَقَهُنَّ |
| ज़मीन को | तुम्हारे लिए | बनाया | वो जिसने | ख़ूब इल्म वाले ने | निहायत ग़ालिब | पैदा किया उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَهْتَدُوْنَ ⑩ ج | لَّعَلَّكُمْ | سُبُلًا | فِيْهَا | لَكُمْ | وَّجَعَلَ | مَهْدًا |
| तुम राह पाओ | ताकि तुम | रास्ते | उसमें | तुम्हारे लिए | और उसने बनाए | बिछौना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖ | فَاَنْشَرْنَا | بِقَدَرٍ ج | مَآءً | مِنَ السَّمَآءِ | نَزَّلَ | وَالَّذِىْ |
| साथ उसके | फिर ज़िंदा किया हमने | साथ एक अंदाज़े के | पानी | आसमान से | उतारा | और वो जिसने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْاَزْوَاجَ | خَلَقَ | وَالَّذِىْ | تُخْرَجُوْنَ ⑪ | كَذٰلِكَ | مَّيْتًا ج | بَلْدَةً |
| जोड़े | बनाए | और वो जिसने | तुम निकाले जाओगे | इसी तरह | मुर्दा को | शहर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَرْكَبُوْنَ ⑫ لا | مَا | وَالْاَنْعَامِ | مِّنَ الْفُلْكِ | لَكُمْ | وَجَعَلَ | كُلَّهَا |
| तुम सवारी करते हो | जिन पर | और मवेशियों को | कश्तियों | तुम्हारे लिए | और उसने बनाया | सारे के सारे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِذَا | رَبِّكُمْ | نِعْمَةَ | تَذْكُرُوْا | ثُمَّ | عَلٰى ظُهُوْرِهٖ | لِتَسْتَوٗا |
| जब | अपने रब की | नेअमत | तुम याद करो | फिर | उनकी पुश्तों पर | ताकि तुम जम कर बैठो |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اسۡتَوَيۡتُمۡ | عَلَيۡهِ | وَ تَقُوۡلُوۡا | سُبۡحٰنَ | الَّذِىۡ | سَخَّرَ | لَنَا | هٰذَا |
| तुम जम कर बैठ जाओ | उन पर | और तुम कहो | पाक है | वो जिसने | मुसख़्ख़र किया | हमारे लिए | इसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | كُنَّا | لَهٗ | مُقۡرِنِيۡنَ ﴿13﴾ | وَ اِنَّاۤ | اِلٰى رَبِّنَا | لَمُنۡقَلِبُوۡنَ ﴿14﴾ |
| और ना | थे हम | इसे | क़ाबू में लाने वाले | और बेशक हम | तरफ़ अपने रब के | यक़ीनन पलटने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَجَعَلُوۡا | لَهٗ | مِنۡ عِبَادِهٖ | جُزۡءًا ؕ | اِنَّ | الۡاِنۡسَانَ | لَكَفُوۡرٌ |
| और उन्होंने बना दिया | उसके लिए | उसके बंदों में से | एक जुज़ (औलाद) | बेशक | इंसान | यक़ीनन बहुत नाशुक्रा है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّبِيۡنٌ ﴿15﴾ ؕ | اَمِ | اتَّخَذَ | مِمَّا | يَخۡلُقُ | بَنٰتٍ | وَّ اَصۡفٰىكُمۡ |
| खुल्लम-खुल्ला | या | उसने बना लीं | उसमें से जो | वो पैदा करता है | बेटियां | और चुन लिया तुम्हें |

ع 1 15 7

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالۡبَنِيۡنَ ﴿16﴾ | وَ اِذَا | بُشِّرَ | اَحَدُهُمۡ | بِمَا | ضَرَبَ | لِلرَّحۡمٰنِ |
| बेटों के लिए | हालांकि जब | ख़ुशख़बरी दी जाती है | उनमें से किसी एक को | साथ उसके जो | उसने बयान की | रहमान के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَثَلًا | ظَلَّ | وَجۡهُهٗ | مُسۡوَدًّا | وَّهُوَ | كَظِيۡمٌ ﴿17﴾ | اَوَمَنۡ | يُّنَشَّؤُا |
| मिसाल | हो जाता है | चेहरा उसका | स्याह | और वो | ग़म से भरा होता है | क्या भला जिसे | पाला जाता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِى الۡحِلۡيَةِ | وَهُوَ | فِى الۡخِصَامِ | غَيۡرُ | مُبِيۡنٍ ﴿18﴾ | وَجَعَلُوا | الۡمَلٰٓئِكَةَ |
| ज़ेवरात में | और वो | झगड़े में | ग़ैर | वाज़ेह है | और उन्होंने बना लिया | फ़रिश्तों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيۡنَ | هُمۡ | عِبٰدُ | الرَّحۡمٰنِ | اِنَاثًا ؕ | اَشَهِدُوۡا | خَلۡقَهُمۡ ؕ |
| जो | वो | बंदे हैं | रहमान के | औरतें | क्या वो हाज़िर थे | उनकी पैदाइश (के वक़्त) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَتُكۡتَبُ | شَهَادَتُهُمۡ | وَيُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿19﴾ | وَقَالُوۡا | لَوۡ | شَآءَ | الرَّحۡمٰنُ |
| ज़रूर लिखी जाएगी | गवाही उनकी | और वो पूछे जाएंगे | और वो कहते हैं | अगर | चाहता | रहमान |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | عَبَدۡنٰهُمۡ ؕ | مَا | لَهُمۡ | بِذٰلِكَ | مِنۡ عِلۡمٍ ۚ | اِنۡ | هُمۡ |
| ना | इबादत करते हम उनकी | नहीं | उनके लिए | इसका | कोई इल्म | नहीं हैं | वो |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | يَخۡرُصُوۡنَ (20) ط | اَمۡ | اٰتَيۡنٰهُمۡ | كِتٰبًا | مِّنۡ قَبۡلِهٖ | فَهُمۡ | بِهٖ |
| मगर | वो अंदाज़े लगाते हैं | या | दी हमने उन्हें | कोई किताब | इससे पहले | तो वो | उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُسۡتَمۡسِكُوۡنَ (21) | بَلۡ | قَالُوۡۤا | اِنَّا | وَجَدۡنَاۤ | اٰبَآءَنَا | عَلٰۤى اُمَّةٍ |
| मज़बूत पकड़े हुए हैं | बल्कि | उन्होंने कहा | बेशक हम | पाया हमने | अपने आबा ओ अजदाद को | एक तरीक़े पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاِنَّا | عَلٰۤى اٰثٰرِهِمۡ | مُّهۡتَدُوۡنَ (22) | وَكَذٰلِكَ | مَاۤ | اَرۡسَلۡنَا | مِنۡ قَبۡلِكَ |
| और बेशक हम | उन्हीं के नक़्शे क़दम पर | राह पाने वाले हैं | और इसी तरह | नहीं | भेजा हमने | आपसे क़ब्ल |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِىۡ قَرۡيَةٍ | مِّنۡ نَّذِيۡرٍ | اِلَّا | قَالَ | مُتۡرَفُوۡهَاۤ لا | اِنَّا | وَجَدۡنَاۤ |
| किसी बस्ती में | कोई डराने वाला | मगर | कहा | उसके ख़ुशहाल लोगों ने | बेशक हम | पाया हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰبَآءَنَا | عَلٰۤى اُمَّةٍ | وَّاِنَّا | عَلٰۤى اٰثٰرِهِمۡ | مُّقۡتَدُوۡنَ (23) | قٰلَ | اَوَلَوۡ |
| अपने आबा ओ अजदाद को | एक तरीक़े पर | और बेशक हम | उन्हीं के नक़्शे क़दम पर | पीछे चलने वाले हैं | उसने कहा | क्या भला अगर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| جِئۡتُكُمۡ | بِاَهۡدٰى | مِمَّا | وَجَدۡتُّمۡ | عَلَيۡهِ | اٰبَآءَكُمۡ ط |
| लाया हूं मैं तुम्हारे पास | ज़्यादा हिदायत वाला (तरीक़ा) | उससे जो | पाया तुमने | उस पर | अपने आबा ओ अजदाद को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالُوۡۤا | اِنَّا | بِمَاۤ | اُرۡسِلۡتُمۡ | بِهٖ | كٰفِرُوۡنَ (24) | فَانۡتَقَمۡنَا |
| उन्होंने कहा | बेशक हम | उसका जो | भेजे गए तुम | साथ उसके | इंकार करने वाले हैं | पस इन्तिक़ाम लिया हमने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنۡهُمۡ | فَانۡظُرۡ | كَيۡفَ | كَانَ | عَاقِبَةُ | الۡمُكَذِّبِيۡنَ (25) ع | وَاِذۡ | قَالَ |
| उनसे | तो देखो | किस तरह | हुआ | अंजाम | झुठलाने वालों का | और जब | कहा |

ع 2 10 8

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِبۡرٰهِيۡمُ | لِاَبِيۡهِ | وَقَوۡمِهٖۤ | اِنَّنِىۡ | بَرَآءٌ | مِّمَّا | تَعۡبُدُوۡنَ (26) لا |
| इब्राहीम ने | अपने बाप से | और अपनी क़ौम से | बेशक मैं | बेज़ार हूं | उनसे जिनकी | तुम इबादत करते हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | الَّذِىۡ | فَطَرَنِىۡ | فَاِنَّهٗ | سَيَهۡدِيۡنِ (27) | وَجَعَلَهَا | كَلِمَةًۢ |
| सिवाए | उसके जिसने | पैदा किया मुझे | तो बेशक वो | वो ज़रूर हिदायत देगा मुझे | और उसने बना दिया उसे | एक बात |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَاقِيَةً | فِىۡ عَقِبِهٖ | لَعَلَّهُمۡ | يَرۡجِعُوۡنَ ﴿28﴾ | بَلۡ | مَتَّعۡتُ | هٰٓؤُلَآءِ |
| बाक़ी रहने वाली | अपने पिछलों में | ताकि वो | वो रुजूअ करें | बल्कि | सामाने ज़िंदगी दिया मैंने | उन्हें |
| وَاٰبَآءَهُمۡ | حَتّٰى | جَآءَهُمُ | الۡحَقُّ | وَرَسُوۡلٌ | مُّبِيۡنٌ ﴿29﴾ | وَلَمَّا |
| और उनके आबा ओ अजदाद को | यहां तक कि | आ गया उनके पास | हक़ | और रसूल | वाज़ेह करने वाला | और जब |
| جَآءَهُمُ | الۡحَقُّ | قَالُوۡا | هٰذَا | سِحۡرٌ | وَّاِنَّا | بِهٖ | كٰفِرُوۡنَ ﴿30﴾ |
| आ गया उनके पास | हक़ | उन्होंने कहा | ये | जादू है | और बेशक हम | इसका | इंकार करने वाले हैं |
| وَقَالُوۡا | لَوۡلَا | نُزِّلَ | هٰذَا | الۡقُرۡاٰنُ | عَلٰى رَجُلٍ | مِّنَ الۡقَرۡيَتَيۡنِ |
| और उन्होंने कहा | क्यों नहीं | नाज़िल किया गया | ये | क़ुरआन | ऊपर किसी शख़्स के | दो बस्तियों में से |
| عَظِيۡمٍ ﴿31﴾ | اَهُمۡ | يَقۡسِمُوۡنَ | رَحۡمَتَ | رَبِّكَ ؕ | نَحۡنُ | قَسَمۡنَا | بَيۡنَهُمۡ |
| बहुत बड़े | क्या वो | वो तक़्सीम करते हैं | रहमत | आपके रब की | हम | तक़सीम कर रखी है हमने | दर्मियान उनके |
| مَّعِيۡشَتَهُمۡ | فِى الۡحَيٰوةِ | الدُّنۡيَا | وَرَفَعۡنَا | بَعۡضَهُمۡ | فَوۡقَ | بَعۡضٍ |
| मईशत उनकी | ज़िंदगी में | दुनिया की | और बुलंद किया हमने | उनके बाज़ को | ऊपर | बाज़ के |
| دَرَجٰتٍ | لِّيَتَّخِذَ | بَعۡضُهُمۡ | بَعۡضًا | سُخۡرِيًّا ؕ | وَرَحۡمَتُ | رَبِّكَ |
| दरजात में | ताकि बनाऐं | उनके बाज़ | बाज़ को | ख़िदमतगार | और रहमत | आपके रब की |
| خَيۡرٌ | مِّمَّا | يَجۡمَعُوۡنَ ﴿32﴾ | وَلَوۡلَآ | اَنۡ | يَّكُوۡنَ | النَّاسُ | اُمَّةً |
| बेहतर है | उससे जो | वो जमा करते हैं | और अगर ये ना होता | कि | हो जाऐंगे | लोग | उम्मत |
| وَّاحِدَةً | لَّجَعَلۡنَا | لِمَنۡ | يَّكۡفُرُ | بِالرَّحۡمٰنِ | لِبُيُوۡتِهِمۡ | سُقُفًا |
| एक ही | अलबत्ता बना देते हम | उनके लिए जो | कुफ़्र करते हैं | रहमान का | उनके घरों की | छतें |
| مِّنۡ فِضَّةٍ | وَّمَعَارِجَ | عَلَيۡهَا | يَظۡهَرُوۡنَ ﴿33﴾ | وَلِبُيُوۡتِهِمۡ | اَبۡوَابًا |
| चांदी से | और सीढ़ियां | जिन पर | वो चढ़ते हैं | और उनके घरों के | दरवाज़े |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّسُرُرًا | عَلَيۡهَا | يَتَّكِـُٔوۡنَ ﴿34﴾ لا | وَزُخۡرُفًا ؕ | وَاِنۡ | كُلُّ | ذٰلِكَ | لَمَّا |
| और तख़्त | जिन पर | वो तकिया लगाते हैं | और सोने के भी | और नहीं है | सब कुछ | ये | मगर |

ع 3 10 9

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَتَاعُ | الۡحَيٰوةِ | الدُّنۡيَا ؕ | وَالۡاٰخِرَةُ | عِنۡدَ رَبِّكَ | لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿35﴾ ع |
| सामान | ज़िंदगी का | दुनिया की | और आख़िरत | आपके रब के नज़दीक | मुत्तक़ी लोगों के लिए है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنۡ | يَّعۡشُ | عَنۡ ذِكۡرِ | الرَّحۡمٰنِ | نُقَيِّضۡ | لَهٗ | شَيۡطٰنًا | فَهُوَ |
| और जो | अंधा बन जाए | ज़िक्र से | रहमान के | हम मुक़र्रर कर देते हैं | उसके लिए | एक शैतान | तो वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهٗ | قَرِيۡنٌ ﴿36﴾ | وَاِنَّهُمۡ | لَيَصُدُّوۡنَهُمۡ | عَنِ السَّبِيۡلِ | وَيَحۡسَبُوۡنَ |
| उसका | साथी हो जाता है | और बेशक वो | अलबत्ता वो रोकते हैं उन्हें | रास्ते से | और वो समझते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنَّهُمۡ | مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿37﴾ | حَتّٰٓى | اِذَا | جَآءَنَا | قَالَ | يٰلَيۡتَ |
| कि बेशक वो | हिदायत याफ़्ता हैं | यहां तक कि | जब | वो आएगा हमारे पास | वो कहेगा | ऐ काश |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَيۡنِىۡ | وَبَيۡنَكَ | بُعۡدَ | الۡمَشۡرِقَيۡنِ | فَبِئۡسَ | الۡقَرِيۡنُ ﴿38﴾ | وَلَنۡ |
| दर्मियान मेरे | और दर्मियान तुम्हारे | दूरी (होती) | दो मशरिक़ों की | तो कितना बुरा है | साथी | और हरगिज़ ना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّنۡفَعَكُمُ | الۡيَوۡمَ | اِذۡ | ظَّلَمۡتُمۡ | اَنَّكُمۡ | فِى الۡعَذَابِ | مُشۡتَرِكُوۡنَ ﴿39﴾ |
| वो नफ़ा देगा तुम्हें | आज | जब | ज़ुल्म कर चुके तुम | बेशक तुम | अज़ाब में | मुश्तरिक हो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَفَاَنۡتَ | تُسۡمِعُ | الصُّمَّ | اَوۡ | تَهۡدِى | الۡعُمۡىَ | وَمَنۡ | كَانَ |
| क्या भला आप | आप सुनाऐंगे | बहरों को | या | आप राह दिखाऐंगे | अंधों को | और उसे जो | हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِىۡ ضَلٰلٍ | مُّبِيۡنٍ ﴿40﴾ | فَاِمَّا | نَذۡهَبَنَّ | بِكَ | فَاِنَّا | مِنۡهُمۡ |
| गुमराही में | खुली | फिर अगर | हम ले जाऐं | आपको | तो बेशक हम | उनसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّنۡتَقِمُوۡنَ ﴿41﴾ لا | اَوۡ | نُرِيَنَّكَ | الَّذِىۡ | وَعَدۡنٰهُمۡ | فَاِنَّا | عَلَيۡهِمۡ |
| इन्तिक़ाम लेने वाले हैं | या | हम दिखाऐं आपको | वो जिसका | वादा किया हमने उनसे | तो बेशक हम | उन पर |

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿42﴾ | فَاسْتَمْسِكْ | بِالَّذِيْٓ | اُوْحِيَ | اِلَيْكَ ۚ | اِنَّكَ | عَلٰى صِرَاطٍ |
| क़ुदरत रखने वाले हैं | पस मज़बूत थाम लीजिए | उसे जो | वही की जाती है | तरफ आपके | बेशक आप | रास्ते पर हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مُّسْتَقِيْمٍ ﴿43﴾ | وَاِنَّهٗ | لَذِكْرٌ | لَّكَ | وَلِقَوْمِكَ ۚ | وَسَوْفَ |
| सीधे | और बेशक ये | अलबत्ता एक नसीहत है | आपके लिए | और आपकी क़ौम के लिए | और अनक़रीब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُسْـَٔلُوْنَ ﴿44﴾ | وَسْـَٔلْ | مَنْ | اَرْسَلْنَا | مِنْ قَبْلِكَ | مِنْ رُّسُلِنَآ | اَجَعَلْنَا |
| तुम पूछे जाओगे | और पूछ लीजिए | उससे जिसे | भेजा हमने | आपसे क़ब्ल | अपने रसूलों में से | क्या बनाए हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ دُوْنِ | الرَّحْمٰنِ | اٰلِهَةً | يُّعْبَدُوْنَ ﴿45﴾ ع | وَلَقَدْ | اَرْسَلْنَا | مُوْسٰى |
| सिवाए | रहमान के | कुछ इलाह | (जिनकी) बंदगी की जाए | और अलबत्ता तहक़ीक़ | भेजा हमने | मूसा को |

4 ع 10 10

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَآ | اِلٰى فِرْعَوْنَ | وَمَلَا۟ئِهٖ | فَقَالَ | اِنِّيْ | رَسُوْلُ | رَبِّ |
| साथ अपनी निशानियों के | तरफ़ फ़िरऔन | और उसके सरदारों के | तो उसने कहा | बेशक मैं | रसूल हूं | रब का |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعٰلَمِيْنَ ﴿46﴾ | فَلَمَّا | جَآءَهُمْ | بِاٰيٰتِنَآ | اِذَا | هُمْ | مِّنْهَا | يَضْحَكُوْنَ ﴿47﴾ |
| तमाम जहानों के | फिर जब | वो लाया उनके पास | निशानियां हमारी | तब | वो | उनसे | वो हंसते थे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | نُرِيْهِمْ | مِّنْ اٰيَةٍ | اِلَّا | هِيَ | اَكْبَرُ | مِنْ اُخْتِهَا ۡ | وَاَخَذْنٰهُمْ |
| और नहीं | हम दिखाते उन्हें | कोई निशानी | मगर | वो | ज़्यादा बड़ी होती थी | अपने जैसी से | और पकड़ लिया हमने उन्हें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالْعَذَابِ | لَعَلَّهُمْ | يَرْجِعُوْنَ ﴿48﴾ | وَقَالُوْا | يٰٓاَيُّهَ | السّٰحِرُ | ادْعُ | لَنَا |
| साथ अज़ाब के | ताकि वो | वो लौट आएं | और उन्होंने कहा | ऐ | जादूगर | दुआ कर | हमारे लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبَّكَ | بِمَا | عَهِدَ | عِنْدَكَ ۚ | اِنَّنَا | لَمُهْتَدُوْنَ ﴿49﴾ | فَلَمَّا |
| अपने रब से | बवजह उसके जो | उसने अहद किया | तेरे पास | बेशक हम | ज़रूर हिदायत पा लेंगे | फिर जब |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَشَفْنَا | عَنْهُمُ | الْعَذَابَ | اِذَا | هُمْ | يَنْكُثُوْنَ ﴿50﴾ | وَنَادٰى | فِرْعَوْنُ |
| हटा देते हम | उनसे | अज़ाब को | तब | वो | वो अहद तोड़ देते | और पुकारा | फ़िरऔन ने |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْ قَوْمِهٖ | قَالَ | يٰقَوْمِ | اَلَيْسَ | لِيْ | مُلْكُ | مِصْرَ | وَهٰذِهِ | الْاَنْهٰرُ |
| अपनी क़ौम में | कहा | ऐ मेरी क़ौम | क्या नहीं है | मेरे लिए | बादशाहत | मिस्र की | और ये | नहरें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَجْرِيْ | مِنْ تَحْتِيْ ج | اَفَلَا | تُبْصِرُوْنَ ؕ (51) | اَمْ | اَنَا | خَيْرٌ | مِّنْ هٰذَا |
| जो बहती हैं | मेरे नीचे से | क्या फिर नहीं | तुम देखते | बल्कि | मैं | बेहतर हूं | उस (शख़्स) से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْ | هُوَ | مَهِيْنٌ ۙ | وَّلَا | يَكَادُ | يُبِيْنُ (52) | فَلَوْلَآ | اُلْقِيَ |
| वो जो | वो | हक़ीर है | और नहीं | क़रीब कि वो | वो वाज़ेह कर सके (बात को) | तो क्यों नहीं | डाले गए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | اَسْوِرَةٌ | مِّنْ ذَهَبٍ | اَوْ | جَآءَ | مَعَهُ | الْمَلٰٓئِكَةُ | مُقْتَرِنِيْنَ (53) |
| उस पर | कंगन | सोने के | या | आए | साथ उसके | फ़रिश्ते | जमा होकर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاسْتَخَفَّ | قَوْمَهٗ | فَاَطَاعُوْهُ ؕ | اِنَّهُمْ | كَانُوْا | قَوْمًا |
| तो उसने हल्का (बेअक़्ल) कर दिया | अपनी क़ौम को | तो उन्होंने अताअत की उसकी | बेशक वो | थे वो | लोग |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فٰسِقِيْنَ (54) | فَلَمَّآ | اٰسَفُوْنَا | انْتَقَمْنَا | مِنْهُمْ | فَاَغْرَقْنٰهُمْ |
| फ़ासिक़ | तो जब | उन्होंने गुस्सा दिलाया हमें | इन्तिक़ाम लिया हमने | उनसे | फिर ग़र्क़ कर दिया हमने उन्हें |

ع 5 11 11

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَجْمَعِيْنَ (55) ۙ | فَجَعَلْنٰهُمْ | سَلَفًا | وَّمَثَلًا | لِّلْاٰخِرِيْنَ (56) ع | وَلَمَّا |
| सब के सब को | तो बना दिया हमने उन्हें | गए गुज़रे | और एक मिसाल | बाद वालों के लिए | और जब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ضُرِبَ | ابْنُ مَرْيَمَ | مَثَلًا | اِذَا | قَوْمُكَ | مِنْهُ | يَصِدُّوْنَ (57) |
| बयान किया गया | मरियम के बेटे को | बतौरे मिसाल | अचानक | आपकी क़ौम (के लोग) | इससे | चीख़ने चिल्लाने लगे |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالُوْآ | ءَاٰلِهَتُنَا | خَيْرٌ | اَمْ | هُوَ ؕ | مَا | ضَرَبُوْهُ | لَكَ | اِلَّا |
| और उन्होंने कहा | क्या इलाह हमारे | बेहतर हैं | या | वो | नहीं | उन्होंने बयान किया उसे | आपके लिए | मगर |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| جَدَلًا ؕ | بَلْ | هُمْ | قَوْمٌ | خَصِمُوْنَ (58) | اِنْ | هُوَ | اِلَّا | عَبْدٌ |
| झगड़ने को | बल्कि | वो | लोग हैं | झगड़ालू | नहीं | वो | मगर | एक बंदा |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنۡعَمۡنَا | عَلَيۡهِ | وَجَعَلۡنٰهُ | مَثَلًا | لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿59﴾ | وَلَوۡ | نَشَآءُ |
| इनआम किया हमने | जिस पर | और बना दिया हमने उसे | एक मिसाल | बनी इस्राईल के लिए | और अगर | हम चाहते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَجَعَلۡنَا | مِنۡكُمۡ | مَّلٰٓئِكَةً | فِى الۡاَرۡضِ | يَخۡلُفُوۡنَ ﴿60﴾ | وَاِنَّهٗ | لَعِلۡمٌ |
| अलबत्ता बना देते हम | तुम्हारी जगह | फ़रिश्ते | जो ज़मीन में | वो जानशीन होते | और बेशक वो | अलबत्ता एक अलामत है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِّلسَّاعَةِ | فَلَا تَمۡتَرُنَّ | بِهَا | وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ | هٰذَا | صِرَاطٌ | مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿61﴾ |
| क़यामत की | तो ना तुम हरगिज़ शक करो | इसमें | और पैरवी करो मेरी | ये है | रास्ता | सीधा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | يَصُدَّنَّكُمُ | الشَّيۡطٰنُ ۚ | اِنَّهٗ | لَكُمۡ | عَدُوٌّ | مُّبِيۡنٌ ﴿62﴾ |
| और ना | हरगिज़ रोके तुम्हें | शैतान | बेशक वो | तुम्हारा | दुश्मन है | खुल्लम-खुल्ला |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَآءَ | عِيۡسٰى | بِالۡبَيِّنٰتِ | قَالَ | قَدۡ | جِئۡتُكُمۡ | بِالۡحِكۡمَةِ |
| लाए | ईसा | वाज़ेह निशानियां | उसने कहा | तहक़ीक़ | लाया हूं मैं तुम्हारे पास | हिक्मत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلِاُبَيِّنَ | لَكُمۡ | بَعۡضَ | الَّذِىۡ | تَخۡتَلِفُوۡنَ | فِيۡهِ ۚ | فَاتَّقُوا |
| और ताकि मैं वाज़ेह कर दूं | तुम्हारे लिए | बाज़ | वो चीज़ | तुम इख़्तिलाफ़ करते हो | जिसमें | पस डरो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿63﴾ | اِنَّ | اللّٰهَ | هُوَ | رَبِّىۡ | وَرَبُّكُمۡ | فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ |
| अल्लाह से | और इताअत करो मेरी | बेशक | अल्लाह | वो ही है | रब मेरा | और रब तुम्हारा | पस इबादत करो उसकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هٰذَا | صِرَاطٌ | مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿64﴾ | فَاخۡتَلَفَ | الۡاَحۡزَابُ | مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ | فَوَيۡلٌ |
| ये है | रास्ता | सीधा | पस इख़्तिलाफ़ किया | गिरोहों ने | आपस में | पस हलाकत है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِّلَّذِيۡنَ | ظَلَمُوۡا | مِنۡ عَذَابِ | يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿65﴾ | هَلۡ | يَنۡظُرُوۡنَ |
| उनके लिए जिन्होंने | ज़ुल्म किया | अज़ाब से | दर्दनाक दिन के | नहीं | वो इन्तिज़ार करते |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | السَّاعَةَ | اَنۡ | تَاۡتِيَهُمۡ | بَغۡتَةً | وَّهُمۡ | لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿66﴾ |
| मगर | क़यामत का | कि | वो आ जाए उनके पास | अचानक | और वो | ना वो शऊर रखते हों |

ع 6 11 12

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلْاَخِلَّآءُ | يَوْمَئِذٍۢ | بَعْضُهُمْ | لِبَعْضٍ | عَدُوٌّ | اِلَّا | الْمُتَّقِيْنَ ﴿67﴾ ع |
| तमाम दिली दोस्त | उस दिन | बाज़ उनके | बाज़ के | दुश्मन होंगे | सिवाए | मुत्तक़ी लोगों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰعِبَادِ | لَا | خَوْفٌ | عَلَيْكُمُ | الْيَوْمَ | وَلَآ | اَنْتُمْ | تَحْزَنُوْنَ ﴿68﴾ ج |
| ऐ मेरे बंदो | ना | कोई ख़ौफ़ होगा | तुम पर | आज | और ना | तुम | तुम ग़मगीन होगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | بِاٰيٰتِنَا | وَكَانُوْا | مُسْلِمِيْنَ ﴿69﴾ ج | اُدْخُلُوا | الْجَنَّةَ |
| वो लोग जो | ईमान लाए | हमारी आयात पर | और थे वो | फ़रमांबरदार | दाख़िल हो जाओ | जन्नत में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَنْتُمْ | وَاَزْوَاجُكُمْ | تُحْبَرُوْنَ ﴿70﴾ | يُطَافُ | عَلَيْهِمْ | بِصِحَافٍ |
| तुम | और बीवियां तुम्हारी | तुम ख़ुश किए जाओगे | गर्दिश कराया जाएगा | उन पर | रकाबियों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ ذَهَبٍ | وَّاَكْوَابٍ ج | وَفِيْهَا | مَا | تَشْتَهِيْهِ | الْاَنْفُسُ | وَتَلَذُّ |
| सोने की | और साग़र | और इसमें होगा | वो जो | ख़्वाहिश करेंगे जिसकी | दिल | और लज़्ज़त पाऐंगी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْاَعْيُنُ ج | وَاَنْتُمْ | فِيْهَا | خٰلِدُوْنَ ﴿71﴾ ج | وَتِلْكَ | الْجَنَّةُ | الَّتِيْٓ |
| निगाहें | और तुम | उनमें | हमेशा रहने वाले हो | और ये है | जन्नत | वो जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اُوْرِثْتُمُوْهَا | بِمَا | كُنْتُمْ | تَعْمَلُوْنَ ﴿72﴾ | لَكُمْ | فِيْهَا | فَاكِهَةٌ |
| वारिस बनाए गए हो तुम उसके | बवजह उसके जो | थे तुम | तुम अमल करते | तुम्हारे लिए | उसमें | फल होंगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَثِيْرَةٌ | مِّنْهَا | تَاْكُلُوْنَ ﴿73﴾ | اِنَّ | الْمُجْرِمِيْنَ | فِيْ عَذَابِ | جَهَنَّمَ |
| बहुत से | उनमें से | तुम खाओगे | बेशक | मुजरिम लोग | अज़ाब में (होंगे) | जहन्नम के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خٰلِدُوْنَ ﴿74﴾ ج | لَا يُفَتَّرُ | عَنْهُمْ | وَهُمْ | فِيْهِ | مُبْلِسُوْنَ ﴿75﴾ ج | وَمَا |
| हमेशा रहने वाले | ना कम किया जाएगा | उनसे | और वो | उसमें | मायूस होंगे | और नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ظَلَمْنٰهُمْ | وَلٰكِنْ | كَانُوْا | هُمُ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿76﴾ | وَنَادَوْا | يٰمٰلِكُ |
| ज़ुल्म किया हमने उन पर | और लेकिन | थे वो | वो ही | ज़ालिम | और वो पुकारेंगे | ऐ मालिक |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِيَقۡضِ | عَلَيۡنَا | رَبُّكَ ؕ | قَالَ | اِنَّكُمۡ | مّٰكِثُوۡنَ ﴿77﴾ | لَقَدۡ | جِئۡنٰكُمۡ |
| चाहिए कि फ़ैसला कर दे | हम पर | रब तेरा | वो कहेगा | बेशक तुम | (यूं ही) रहने वाले हो | अलबत्ता तहक़ीक़ | लाए हम तुम्हारे पास |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالۡحَقِّ | وَلٰكِنَّ | اَكۡثَرَكُمۡ | لِلۡحَقِّ | كٰرِهُوۡنَ ﴿78﴾ | اَمۡ | اَبۡرَمُوۡۤا |
| हक़ | और लेकिन | अक्सर तुम्हारे | हक़ को | नापसंद करने वाले थे | बल्कि | उन्होंने पुख़्ता फ़ैसला किया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمۡرًا | فَاِنَّا | مُبۡرِمُوۡنَ ﴿79﴾ ۚ | اَمۡ | يَحۡسَبُوۡنَ | اَنَّا | لَا نَسۡمَعُ |
| एक काम का | तो यक़ीनन हम भी | पुख़्ता फ़ैसला करने वाले हैं | या | वो समझते हैं | बेशक हम | नहीं हम सुनते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سِرَّهُمۡ | وَنَجۡوٰىهُمۡ ؕ | بَلٰى | وَرُسُلُنَا | لَدَيۡهِمۡ | يَكۡتُبُوۡنَ ﴿80﴾ | |
| राज़ उनका | और सरगोशी उनकी | क्यों नहीं | और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | उनके पास | वो लिखते हैं | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلۡ | اِنۡ | كَانَ | لِلرَّحۡمٰنِ | وَلَدٌ ۖ | فَاَنَا | اَوَّلُ | الۡعٰبِدِيۡنَ ﴿81﴾ |
| कह दीजिए | अगर | है | रहमान के लिए | कोई औलाद | तो मैं | सबसे पहला हूं | इबादत करने वालों में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سُبۡحٰنَ | رَبِّ | السَّمٰوٰتِ | وَالۡاَرۡضِ | رَبِّ | الۡعَرۡشِ | عَمَّا | يَصِفُوۡنَ ﴿82﴾ |
| पाक है | रब | आसमानों | और ज़मीन का | रब | अर्श का | उससे जो | वो बयान करते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَذَرۡهُمۡ | يَخُوۡضُوۡا | وَيَلۡعَبُوۡا | حَتّٰى | يُلٰقُوۡا | يَوۡمَهُمُ | الَّذِىۡ |
| तो छोड़ दीजिए उन्हें | वो बहस करते रहें | और वो खेलते रहें | यहां तक कि | वो जा मिलें | अपने उस दिन से | जिसका |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُوۡعَدُوۡنَ ﴿83﴾ | وَهُوَ | الَّذِىۡ | فِى السَّمَآءِ | اِلٰهٌ | وَّفِى الۡاَرۡضِ | اِلٰهٌ ؕ |
| वो वादा किए जाते हैं | और वो ही है | जो | आसमान में | इलाह है | और ज़मीन में | इलाह है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَهُوَ | الۡحَكِيۡمُ | الۡعَلِيۡمُ ﴿84﴾ | وَتَبٰرَكَ | الَّذِىۡ | لَهٗ | مُلۡكُ |
| और वो ही है | बहुत हिकमत वाला | ख़ूब इल्म वाला | और बाबरकत है | वो जो | उसी के लिए है | बादशाहत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوٰتِ | وَالۡاَرۡضِ | وَمَا | بَيۡنَهُمَا ۚ | وَعِنۡدَهٗ | عِلۡمُ | السَّاعَةِ ۚ |
| आसमानों | और ज़मीन की | और जो | दर्मियान है इन दोनों के | और उसी के पास है | इल्म | क़यामत का |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ اِلَيْهِ | تُرْجَعُوْنَ ﴿85﴾ | وَلَا | يَمْلِكُ | الَّذِيْنَ | يَدْعُوْنَ | مِنْ دُوْنِهِ |
| और उसी की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | और नहीं | वो इख़्तियार रखते | जिन्हें | वो पुकारते हैं | उसके सिवा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الشَّفَاعَةَ | اِلَّا | مَنْ | شَهِدَ | بِالْحَقِّ | وَهُمْ | يَعْلَمُوْنَ ﴿86﴾ | وَلَئِنْ |
| शफ़ाअत का | मगर | जो | गवाही दे | साथ हक़ के | और वो | वो जानते हों | और अलबत्ता अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَاَلْتَهُمْ | مَّنْ | خَلَقَهُمْ | لَيَقُوْلُنَّ | اللّٰهُ | فَاَنّٰى | يُؤْفَكُوْنَ ﴿87﴾ لا |
| पूछें आप उनसे | किसने | पैदा किया उन्हें | अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे | अल्लाह ने | तो कहां से | वो फेरे जाते हैं |

وقف لازم

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَقِيْلِهٖ | يٰرَبِّ | اِنَّ | هٰٓؤُلَآءِ | قَوْمٌ | لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿88﴾ مُ |
| क़सम है इस (रसूल) के क़ौल की | ऐ मेरे रब | बेशक | ये | लोग | नहीं वो ईमान लाऐंगे |

ع 7 22 13

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاصْفَحْ | عَنْهُمْ | وَقُلْ | سَلٰمٌ ؕ | فَسَوْفَ | يَعْلَمُوْنَ ﴿89﴾ ع |
| पस दरगुज़र कीजिए | उनसे | और कह दीजिए | सलाम है | पस अनक़रीब | वो जान लेंगे |

## سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ 64 — 44

اٰيَاتُهَا: 59 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ع 12

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| حٰمٓ ﴿1﴾ ج | وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾ لا | اِنَّآ | اَنْزَلْنٰهُ | فِيْ لَيْلَةٍ | مُّبٰرَكَةٍ |
| حٰمٓ | क़सम है वाज़ेह किताब की | बेशक हम | नाज़िल किया हमने इसे | एक रात में | बरकत वाली |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّا | كُنَّا | مُنْذِرِيْنَ ﴿3﴾ | فِيْهَا | يُفْرَقُ | كُلُّ | اَمْرٍ | حَكِيْمٍ ﴿4﴾ لا |
| बेशक हम | हैं हम | डराने वाले | इसमें | फ़ैसला किया जाता है | हर | काम | मोहकम का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْرًا | مِّنْ عِنْدِنَا ؕ | اِنَّا | كُنَّا | مُرْسِلِيْنَ ﴿5﴾ ج | رَحْمَةً | مِّنْ رَّبِّكَ ؕ |
| एक हुक्म का | हमारे पास से | बेशक हम | थे हम | भेजने वाले | बतौर रहमत | आपके रब की तरफ़ से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّهٗ | هُوَ | السَّمِيْعُ | الْعَلِيْمُ ﴿6﴾ لا | رَبُّ | السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ | وَمَا |
| बेशक वो | वो ही है | ख़ूब सुनने वाला | ख़ूब इल्म वाला | रब है | आसमानों | और ज़मीन का | और जो |

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بَيْنَهُمَا ۭ | اِنْ | كُنْتُمْ | مُّوْقِنِيْنَ ⑦ | لَآ | اِلٰهَ | اِلَّا | هُوَ |
| दर्मियान है उन दोनों के | अगर | हो तुम | यक़ीन करने वाले | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) | मगर | वो ही |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُحْيٖ | وَيُمِيْتُ ۭ | رَبُّكُمْ | وَرَبُّ | اٰبَاۗىِٕكُمُ | الْاَوَّلِيْنَ ⑧ | بَلْ | هُمْ |
| वो ज़िंदा करता है | और वो मौत देता है | रब तुम्हारा | और रब | तुम्हारे आबा ओ अजदाद का | जो पहले थे | बल्कि | वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْ شَكٍّ | يَّلْعَبُوْنَ ⑨ | فَارْتَقِبْ | يَوْمَ | تَاْتِي | السَّمَاۗءُ | بِدُخَانٍ |
| शक में | वो खेल रहे हैं | पस इन्तिज़ार कीजिए | जिस दिन | आएगा | आसमान | साथ धुऐं के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّبِيْنٍ ۙ⑩ | يَّغْشَى | النَّاسَ ۭ | هٰذَا | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ ⑪ | رَبَّنَا |
| खुले | जो ढांप लेगा | लोगों को | ये है | अज़ाब | दर्दनाक | ऐ हमारे रब |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اكْشِفْ | عَنَّا | الْعَذَابَ | اِنَّا | مُؤْمِنُوْنَ ⑫ | اَنّٰى | لَهُمُ | الذِّكْرٰى |
| हटा दे | हमसे | अज़ाब को | बेशक हम | ईमान लाने वाले हैं | कहां से है | उनके लिए | नसीहत |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَدْ | جَاۗءَهُمْ | رَسُوْلٌ | مُّبِيْنٌ ۙ⑬ | ثُمَّ | تَوَلَّوْا | عَنْهُ | وَقَالُوْا |
| हालांकि तहक़ीक़ | आ चुका उनके पास | एक रसूल | वाज़ेह करने वाला | फिर | वो मुंह मोड़ गए | उससे | और उन्होंने कहा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُعَلَّمٌ | مَّجْنُوْنٌ ⑭ | اِنَّا | كَاشِفُوا | الْعَذَابِ | قَلِيْلًا | اِنَّكُمْ | |
| सिखाया पढ़ाया | दीवाना है | बेशक हम | हटाने वाले हैं | अज़ाब को | थोड़ी देर के लिए | बेशक तुम | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَاۗىِٕدُوْنَ ⑮ | يَوْمَ | نَبْطِشُ | الْبَطْشَةَ | الْكُبْرٰى ۚ | اِنَّا | مُنْتَقِمُوْنَ ⑯ | |
| लौटने वाले हो | जिस दिन | हम पकड़ेंगे | पकड़ | बहुत बड़ी | बेशक हम | इन्तिक़ाम लेने वाले हैं | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَقَدْ | فَتَنَّا | قَبْلَهُمْ | قَوْمَ | فِرْعَوْنَ | وَجَاۗءَهُمْ | رَسُوْلٌ | كَرِيْمٌ ۙ⑰ |
| और अलबत्ता तहक़ीक़ | आज़माया हमने | इनसे क़ब्ल | क़ौमे | फ़िरऔन को | और आया उनके पास | रसूल | मुअज़्ज़िज़ |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | اَدُّوْٓا | اِلَيَّ | عِبَادَ | اللّٰهِ ۭ | اِنِّىْ | لَكُمْ | رَسُوْلٌ | اَمِيْنٌ ۙ⑱ |
| ये कि | हवाले कर दो | मेरी तरफ़ | बंदों को | अल्लाह के | बेशक मैं | तुम्हारे लिए | एक रसूल हूं | अमानतदार |

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّ اَنۡ | لَّا تَعۡلُوۡا | عَلَى اللّٰهِ ۚ | اِنِّىۡٓ | اٰتِيۡكُمۡ | بِسُلۡطٰنٍ | مُّبِيۡنٍ ۚ ﴿19﴾ |
| और ये कि | ना तुम सरकशी करो | अल्लाह (के मुक़ाबले) पर | बेशक मैं | लाया हूं तुम्हारे पास | दलील | वाज़ेह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ اِنِّىۡ | عُذۡتُ | بِرَبِّىۡ | وَ رَبِّكُمۡ | اَنۡ | تَرۡجُمُوۡنِ ﴿20﴾ | وَ اِنۡ | لَّمۡ |
| और बेशक मैं | पनाह ले चुका मैं | अपने रब की | और तुम्हारे रब की | कि | तुम संगसार करो मुझे | और अगर | नहीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تُؤۡمِنُوۡا | لِىۡ | فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿21﴾ | فَدَعَا | رَبَّهٗٓ | اَنَّ | هٰٓؤُلَآءِ | قَوۡمٌ |
| तुम ईमान लाते | मुझ पर | तो अलग हो जाओ मुझसे | तो उसने पुकारा | अपने रब को | बेशक | ये | लोग |

الثلثة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿22﴾ الثلثة | فَاَسۡرِ | بِعِبَادِىۡ | لَيۡلًا | اِنَّكُمۡ | مُّتَّبَعُوۡنَ ﴿23﴾ ۙ | وَاتۡرُكِ |
| मुजरिम हैं | तो ले चलो | मेरे बंदों को | रातों रात | बेशक तुम | पीछा किए जाने वाले हो | और छोड़ दो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الۡبَحۡرَ | رَهۡوًا ؕ | اِنَّهُمۡ | جُنۡدٌ | مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿24﴾ | كَمۡ | تَرَكُوۡا |
| समुन्दर को | साकिन | बेशक वो | लश्कर हैं | ग़र्क़ किए जाने वाले | कितने ही | वो छोड़ गए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنۡ جَنّٰتٍ | وَّ عُيُوۡنٍ ﴿25﴾ ۙ | وَّ زُرُوۡعٍ | وَّ مَقَامٍ | كَرِيۡمٍ ﴿26﴾ ۙ | وَّ نَعۡمَةٍ | كَانُوۡا |
| बाग़ात | और चश्मे | और खेतियां | और मक़ाम | उम्दा | और राहत व आसाइश | थे वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيۡهَا | فٰكِهِيۡنَ ﴿27﴾ ۙ | كَذٰلِكَ ۖ قف | وَ اَوۡرَثۡنٰهَا | قَوۡمًا | اٰخَرِيۡنَ ﴿28﴾ | فَمَا |
| जिसमें | ऐश करने वाले | इसी तरह | और वारिस बना दिया हमने उनका | क़ौम | दूसरी को | तो ना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بَكَتۡ | عَلَيۡهِمُ | السَّمَآءُ | وَ الۡاَرۡضُ | وَمَا | كَانُوۡا | مُنۡظَرِيۡنَ ﴿29﴾ ع | وَ لَقَدۡ |
| रोए | उन पर | आसमान | और ज़मीन | और ना | थे वो | मोहलत दिए जाने वाले | और अलबत्ता तहक़ीक़ |

ع 1 29 14

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| نَجَّيۡنَا | بَنِىۡٓ اِسۡرَآءِيۡلَ | مِنَ الۡعَذَابِ | الۡمُهِيۡنِ ﴿30﴾ ۙ | مِنۡ فِرۡعَوۡنَ ؕ | اِنَّهٗ |
| निजात दी हमने | बनी इस्राईल को | अज़ाब से | ज़िल्लत के | फ़िरऔन से | बेशक वो |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ | عَالِيًا | مِّنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿31﴾ | وَ لَقَدِ | اخۡتَرۡنٰهُمۡ |
| था वो | सरकश | हद से बढ़ने वालों में से | और अलबत्ता तहक़ीक़ | मुन्तख़िब कर लिया हमने उन्हें |

| |
|---|
| عَلٰى عِلۡمٍ |
| इल्म की बिना पर |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿32﴾ ج | وَاٰتَيْنٰهُمْ | مِّنَ الْاٰيٰتِ | مَا | فِيْهِ | بَلٰٓؤٌا | مُّبِيْنٌ ﴿33﴾ |
| तमाम जहानों पर | और दीं हमने उन्हें | निशानियां | जो | उनमें | आज़माइश थी | वाज़ेह |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | هٰٓؤُلَآءِ | لَيَقُوْلُوْنَ ﴿34﴾ لا | اِنْ | هِيَ | اِلَّا | مَوْتَتُنَا | الْاُوْلٰى | وَمَا |
| बेशक | ये लोग | अलबत्ता वो कहते हैं | नहीं | ये | मगर | मौत हमारी | पहली | और नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| نَحْنُ | بِمُنْشَرِيْنَ ﴿35﴾ | فَاْتُوْا | بِاٰبَآئِنَآ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿36﴾ |
| हम | उठाए जाने वाले हैं | पस ले आओ | हमारे आबा ओ अजदाद को | अगर | हो तुम | सच्चे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَهُمْ | خَيْرٌ | اَمْ | قَوْمُ | تُبَّعٍ لا | وَّالَّذِيْنَ | مِنْ قَبْلِهِمْ ط |
| क्या वो | बेहतर हैं | या | क़ौम | तुब्बअ की | और वो जो | उनसे पहले थे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَهْلَكْنٰهُمْ ز | اِنَّهُمْ | كَانُوْا | مُجْرِمِيْنَ ﴿37﴾ | وَمَا | خَلَقْنَا | السَّمٰوٰتِ |
| हलाक कर दिया हमने उन्हें | बेशक वो | थे वो | मुजरिम | और नहीं | पैदा किया हमने | आसमानों |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضَ | وَمَا | بَيْنَهُمَا | لٰعِبِيْنَ ﴿38﴾ | مَا | خَلَقْنٰهُمَآ | اِلَّا |
| और ज़मीन को | और जो | दर्मियान है इन दोनों के | खेलते हुए | नहीं | पैदा किया हमने इन दोनों को | मगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالْحَقِّ | وَلٰكِنَّ | اَكْثَرَهُمْ | لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿39﴾ | اِنَّ | يَوْمَ | الْفَصْلِ |
| साथ हक़ के | और लेकिन | अक्सर उनके | नहीं वो इल्म रखते | बेशक | दिन | फ़ैसले का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِيْقَاتُهُمْ | اَجْمَعِيْنَ ﴿40﴾ لا | يَوْمَ | لَا يُغْنِيْ | مَوْلًى | عَنْ مَّوْلًى | شَيْئًا |
| मुक़र्रर वक़्त है उनका | सब के सब का | जिस दिन | ना काम आएगा | कोई दोस्त | किसी दोस्त के | कुछ भी |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّلَا | هُمْ | يُنْصَرُوْنَ ﴿41﴾ لا | اِلَّا | مَنْ | رَّحِمَ | اللّٰهُ ط | اِنَّهٗ | هُوَ |
| और ना | वो | वो मदद किए जाऐंगे | मगर | जिस पर | रहम फ़रमाए | अल्लाह | यक़ीनन वो | वो ही है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعَزِيْزُ | الرَّحِيْمُ ﴿42﴾ ع | اِنَّ | شَجَرَتَ | الزَّقُّوْمِ ﴿43﴾ لا | طَعَامُ | الْاَثِيْمِ ﴿44﴾ ج ط |
| बहुत ज़बरदस्त | निहायत रहम करने वाला | बेशक | दरख़्त | ज़क़्क़ूम का | खाना है | गुनाहगार का |

ع 2 13 15 معانقة 14

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَالۡمُهۡلِ ۚ | يَغۡلِىۡ | فِى الۡبُطُوۡنِ ﴿45﴾ ۙ | كَغَلۡىِ | الۡحَمِيۡمِ ﴿46﴾ | خُذُوۡهُ |
| पिघले हुए तांबे की तरह | जोश खाएगा | पेटों में | मानिंद जोश खाने | खौलते पानी के | (कहा जाएगा) पकड़ो इसे |
| فَاعۡتِلُوۡهُ | اِلٰى | سَوَآءِ | الۡجَحِيۡمِ ﴿47﴾ ۖ | ثُمَّ | صُبُّوۡا | فَوۡقَ | رَاۡسِهٖ |
| पस घसीटो इसे | तरफ़ | दर्मियान | जहन्नम के | फिर | उंडेल दो | ऊपर | उसके सर के |
| مِنۡ عَذَابِ | الۡحَمِيۡمِ ﴿48﴾ ؕ | ذُقۡ ۚ | اِنَّكَ | اَنۡتَ | الۡعَزِيۡزُ | الۡكَرِيۡمُ ﴿49﴾ |
| अज़ाब से | खौलते पानी के | (कहा जाएगा) चखो | बेशक तुम | तुम ही | बहुत ज़बरदस्त | इज़्ज़त वाले थे |
| اِنَّ | هٰذَا | مَا | كُنۡتُمۡ | بِهٖ | تَمۡتَرُوۡنَ ﴿50﴾ | اِنَّ | الۡمُتَّقِيۡنَ |
| बेशक | ये है | वो जो | थे तुम | इसमें | तुम शक करते | बेशक | मुत्तक़ी लोग |
| فِىۡ مَقَامٍ | اَمِيۡنٍ ﴿51﴾ ۙ | فِىۡ جَنّٰتٍ | وَّعُيُوۡنٍ ﴿52﴾ ۚ | يَّلۡبَسُوۡنَ | مِنۡ سُنۡدُسٍ |
| जगह पर होंगे | अमन वाली | बाग़ों में | और चश्मों में | वो पहनेंगे | बारीक रेशम |
| وَّ اِسۡتَبۡرَقٍ | مُّتَقٰبِلِيۡنَ ﴿53﴾ ۚ | كَذٰلِكَ ۖ | وَزَوَّجۡنٰهُمۡ | بِحُوۡرٍ | عِيۡنٍ ﴿54﴾ ؕ |
| और मोटे रेशम से | आमने-सामने बैठने वाले | इसी तरह | और ब्याह देंगे हम उन्हें | गोरी औरतों से | बड़ी आंखों वाली |
| يَدۡعُوۡنَ | فِيۡهَا | بِكُلِّ | فَاكِهَةٍ | اٰمِنِيۡنَ ﴿55﴾ ۙ | لَا يَذُوۡقُوۡنَ | فِيۡهَا |
| वो तलब करेंगे | उसमें | हर क़िस्म के | फल | बेख़ौफ़ हो कर | ना वो चखेंगे | उसमें |
| الۡمَوۡتَ | اِلَّا | الۡمَوۡتَةَ | الۡاُوۡلٰى ۚ | وَوَقٰىهُمۡ | عَذَابَ | الۡجَحِيۡمِ ﴿56﴾ ۙ | فَضۡلًا |
| मौत को | सिवाए | मौत | पहली के | और वो बचा लेगा उन्हें | अज़ाब से | जहन्नम के | फ़ज़्ल है |
| مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ | ذٰلِكَ | هُوَ | الۡفَوۡزُ | الۡعَظِيۡمُ ﴿57﴾ | فَاِنَّمَا | يَسَّرۡنٰهُ |
| आपके रब की तरफ़ से | यही | वो | कामयाबी है | बहुत बड़ी | पस बेशक | आसान कर दिया हमने उसे |
| بِلِسَانِكَ | لَعَلَّهُمۡ | يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿58﴾ | فَارۡتَقِبۡ | اِنَّهُمۡ | مُّرۡتَقِبُوۡنَ ﴿59﴾ ع 3 17 16 |
| आपकी ज़बान पर | शायद कि वो | वो नसीहत पकड़ें | पस आप इन्तिज़ार कीजिए | बेशक वो (भी) | इन्तिज़ार करने वाले हैं |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

## سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ 65 — 45

اٰيَاتُهَا: 37 — رُكُوْعَاتُهَا: 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حٰمٓ ① | تَنْزِيْلُ | الْكِتٰبِ | مِنَ اللّٰهِ | الْعَزِيْزِ | الْحَكِيْمِ ② | اِنَّ |
| حٰمٓ | नाज़िल करना है | किताब का | अल्लाह की तरफ़ से | जो बहुत ज़बरदस्त है | ख़ूब हिक्मत वाला है | बेशक |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فِي السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ | لَاٰيٰتٍ | لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ③ | وَفِيْ خَلْقِكُمْ | وَمَا |
| आसमानों में | और ज़मीन में | अलबत्ता निशानियां हैं | ईमान लाने वालों के लिए | और तुम्हारी पैदाइश में | और जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَبُثُّ | مِنْ دَآبَّةٍ | اٰيٰتٌ | لِّقَوْمٍ | يُّوْقِنُوْنَ ④ | وَاخْتِلَافِ | الَّيْلِ |
| वो फैलाता है | जानदारों में से | निशानियां हैं | उन लोगों के लिए | जो यक़ीन रखते हैं | और इख़्तिलाफ़ में | रात |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالنَّهَارِ | وَمَآ | اَنْزَلَ | اللّٰهُ | مِنَ السَّمَآءِ | مِنْ رِّزْقٍ | فَاَحْيَا |
| और दिन के | और जो | उतारा | अल्लाह ने | आसमान से | रिज़्क़ में से | फिर उसने ज़िंदा किया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهِ | الْاَرْضَ | بَعْدَ | مَوْتِهَا | وَتَصْرِيْفِ | الرِّيٰحِ | اٰيٰتٌ | لِّقَوْمٍ |
| साथ उसके | ज़मीन को | बाद | उसकी मौत के | और गर्दिश में | हवाओं की | निशानियां हैं | उन लोगों के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّعْقِلُوْنَ ⑤ | تِلْكَ | اٰيٰتُ | اللّٰهِ | نَتْلُوْهَا | عَلَيْكَ | بِالْحَقِّ ۚ | فَبِاَيِّ |
| जो अक़्ल रखते हैं | ये | आयात हैं | अल्लाह की | हम पढ़ते हैं इन्हें | आप पर | साथ हक़ के | तो साथ किस |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَدِيْثٍ | بَعْدَ | اللّٰهِ | وَاٰيٰتِهٖ | يُؤْمِنُوْنَ ⑥ | وَيْلٌ | لِّكُلِّ | اَفَّاكٍ |
| बात के | बाद | अल्लाह के | और उसकी आयात के | वो ईमान लाऐंगे | हलाकत है | वास्ते हर | बहुत झूठे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَثِيْمٍ ⑦ | يَّسْمَعُ | اٰيٰتِ | اللّٰهِ | تُتْلٰى | عَلَيْهِ | ثُمَّ | يُصِرُّ |
| बहुत गुनाहगार के | वो सुनता है | आयात को | अल्लाह की | जो पढ़ी जाती हैं | उस पर | फिर | वो इसरार करता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُسْتَكْبِرًا | كَاَنْ | لَّمْ | يَسْمَعْهَا ۚ | فَبَشِّرْهُ | بِعَذَابٍ | اَلِيْمٍ ⑧ |
| तकब्बुर करते हुए | गोया कि | नहीं | उसने सुना उन्हें | तो ख़ुशख़बरी दे दीजिए उसे | अज़ाब | दर्दनाक की |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اُولٰٓئِكَ | هُزُوًا ؕ | اتَّخَذَهَا | شَيْـًٔا | مِنْ اٰيٰتِنَا | عَلِمَ | وَاِذَا |
| यही लोग हैं | मज़ाक़ | वो बना लेता है उसे | कोई चीज़ | हमारी आयात में से | वो जान लेता है | और जब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُغْنِيْ | وَلَا | جَهَنَّمُ ۚ | مِنْ وَّرَآئِهِمْ | مُّهِيْنٌ ⑨ ؕ | عَذَابٌ | لَهُمْ |
| काम आएगा | और ना | जहन्नम है | उनके आगे | ज़लील करने वाला | अज़ाब है | उनके लिए |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | مِنْ دُوْنِ | اتَّخَذُوْا | مَا | وَّلَا | شَيْـًٔا | كَسَبُوْا | مَّا | عَنْهُمْ |
| अल्लाह के | सिवाए | उन्होंने बना लिए | वो जो | और ना | कुछ भी | उन्होंने कमाया | जो | उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالَّذِيْنَ | هُدًى ۚ | هٰذَا | عَظِيْمٌ ⑩ ؕ | عَذَابٌ | وَلَهُمْ | اَوْلِيَآءَ ۚ |
| और वो जिन्होंने | हिदायत | ये है | बहुत बड़ा | अज़ाब है | और उनके लिए | हिमायती |

ع 1 11 17

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلِيْمٌ ⑪ ع | مِّنْ رِّجْزٍ | عَذَابٌ | لَهُمْ | رَبِّهِمْ | بِاٰيٰتِ | كَفَرُوْا |
| दर्दनाक | बदतरीन क़िस्म का | अज़ाब है | उनके लिए | अपने रब की | आयात का | इंकार किया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهِ | الْفُلْكُ | لِتَجْرِيَ | الْبَحْرَ | لَكُمُ | سَخَّرَ | الَّذِيْ | اَللّٰهُ |
| उसमें | कश्तियां | ताकि चलें | समुन्दर को | तुम्हारे लिए | मुसख़्ख़र किया | वो है जिसने | अल्लाह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَسَخَّرَ | تَشْكُرُوْنَ ⑫ ۚ | وَلَعَلَّكُمْ | مِنْ فَضْلِهٖ | وَلِتَبْتَغُوْا | بِاَمْرِهٖ |
| और उसने मुसख़्ख़र किया | तुम शुक्र अदा करो | और ताकि तुम | उसके फ़ज़्ल से | और ताकि तुम तलाश करो | उसके हुक्म से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | مِّنْهُ ؕ | جَمِيْعًا | فِي الْاَرْضِ | وَمَا | فِي السَّمٰوٰتِ | مَّا | لَكُمْ |
| बेशक | अपनी तरफ़ से | सब का सब | ज़मीन में है | और जो कुछ | आसमानों में है | जो कुछ | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰمَنُوْا | لِّلَّذِيْنَ | قُلْ | يَّتَفَكَّرُوْنَ ⑬ | لِّقَوْمٍ | لَاٰيٰتٍ | فِيْ ذٰلِكَ |
| ईमान लाए | उन लोगों को जो | कह दीजिए | जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं | उन लोगों के लिए | अलबत्ता निशानियां हैं | इसमें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | قَوْمًاۢ | لِيَجْزِيَ | اَيَّامَ اللّٰهِ | لَا يَرْجُوْنَ | لِلَّذِيْنَ | يَغْفِرُوْا |
| बवजह उसके जो | एक क़ौम को | ताकि वो बदला दे | अल्लाह के दिनों की | नहीं वो उम्मीद रखते | उनको जो | कि वो माफ़ कर दें |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانُوْا | يَكْسِبُوْنَ ﴿14﴾ | مَنْ | عَمِلَ | صَالِحًا | فَلِنَفْسِهٖ ۚ | وَمَنْ |
| थे वो | वो कमाई करते | जिसने | अमल किया | नेक | तो उसी के लिए है | और जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَسَآءَ | فَعَلَيْهَا ۗ | ثُمَّ | اِلٰى رَبِّكُمْ | تُرْجَعُوْنَ ﴿15﴾ | وَلَقَدْ | اٰتَيْنَا |
| बुराई करता है | तो उसी पर है | फिर | अपने रब ही की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | और अलबत्ता तहक़ीक़ | दी हमने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ | الْكِتٰبَ | وَالْحُكْمَ | وَالنُّبُوَّةَ | وَرَزَقْنٰهُمْ | مِّنَ الطَّيِّبٰتِ |
| बनी इस्राईल को | किताब | और हुकूमत | और नुबूव्वत | और रिज़्क़ दिया हमने उन्हें | पाकीज़ा चीज़ों से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَفَضَّلْنٰهُمْ | عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿16﴾ ۚ | وَاٰتَيْنٰهُمْ | بَيِّنٰتٍ | مِّنَ الْاَمْرِ ۚ | فَمَا |
| और फ़ज़ीलत दी हमने उन्हें | तमाम जहानों पर | और दीं हमने उन्हें | वाज़ेह निशानियाँ | (दीन के) मामले में | तो नहीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اخْتَلَفُوْٓا | اِلَّا | مِنْۢ بَعْدِ | مَا | جَآءَهُمُ | الْعِلْمُ ۙ | بَغْيًۢا | بَيْنَهُمْ ؕ |
| उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया | मगर | बाद इसके | जो | आया उनके पास | इल्म | ज़िद की वजह से | आपस में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | رَبَّكَ | يَقْضِيْ | بَيْنَهُمْ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ | فِيْمَا | كَانُوْا |
| बेशक | रब आपका | वो फ़ैसला करेगा | दर्मियान उनके | दिन | क़यामत के | उसमें जो | थे वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهِ | يَخْتَلِفُوْنَ ﴿17﴾ | ثُمَّ | جَعَلْنٰكَ | عَلٰى شَرِيْعَةٍ | مِّنَ الْاَمْرِ |
| जिसमें | वो इख़्तिलाफ़ करते | फिर | कर दिया हमने आपको | वाज़ेह रास्ते पर | (दीन के) मामले में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاتَّبِعْهَا | وَلَا | تَتَّبِعْ | اَهْوَآءَ | الَّذِيْنَ | لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿18﴾ | اِنَّهُمْ |
| पस पैरवी कीजिए उसकी | और ना | आप पैरवी कीजिए | ख़्वाहिशात की | उन लोगों की जो | नहीं वो इल्म रखते | बेशक वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنْ | يُّغْنُوْا | عَنْكَ | مِنَ اللّٰهِ | شَيْـًٔا ؕ | وَاِنَّ | الظّٰلِمِيْنَ | بَعْضُهُمْ |
| हरगिज़ नहीं | वो काम आऐंगे | आप के | अल्लाह से | कुछ भी | और बेशक | ज़ालिम लोग | बाज़ उनके |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْلِيَآءُ | بَعْضٍ ۚ | وَاللّٰهُ | وَلِيُّ | الْمُتَّقِيْنَ ﴿19﴾ | هٰذَا | بَصَآئِرُ | لِلنَّاسِ |
| दोस्त हैं | बाज़ के | और अल्लाह | दोस्त है | मुत्तक़ी लोगों का | ये | बसीरत की बातें हैं | लोगों के लिए |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | حَسِبَ | اَمْ | يُّوْقِنُوْنَ (20) | لِّقَوْمٍ | وَّرَحْمَةٌ | وَهُدًى |
| उन लोगों ने जिन्होंने | समझ रखा है | या | जो यक़ीन रखते हैं | उन लोगों के लिए | और रहमत है | और हिदायत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَعَمِلُوا | اٰمَنُوْا | كَالَّذِيْنَ | نَّجْعَلَهُمْ | اَنْ | السَّيِّاٰتِ | اجْتَرَحُوا |
| और उन्होंने अमल किए | ईमान लाए | उन लोगों की तरह जो | हम कर देंगे उन्हें | कि | बुराईयों का | इर्तिकाब किया |

ع 2 10 18

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَحْكُمُوْنَ (21) ع | مَا | سَآءَ | وَمَمَاتُهُمْ ط | مَّحْيَاهُمْ | سَوَآءً | الصّٰلِحٰتِ لا |
| वो फ़ैसला कर रहे हैं | जो | कितना बुरा है | और मरना उनका | जीना उनका | बराबर है | नेक |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نَفْسٍ | كُلُّ | وَلِتُجْزٰى | بِالْحَقِّ | وَالْاَرْضَ | السَّمٰوٰتِ | اللّٰهُ | وَخَلَقَ |
| नफ़्स को | हर | और ताकि बदला दिया जाए | साथ हक़ के | और ज़मीन को | आसमानों | अल्लाह ने | और पैदा किया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اتَّخَذَ | مَنِ | اَفَرَءَيْتَ | لَا يُظْلَمُوْنَ (22) | وَهُمْ | كَسَبَتْ | بِمَا |
| बना लिया | उसे जिसने | क्या फिर देखा आपने | वो ज़ुल्म ना किए जाएंगे | और वो | उसने कमाई की | उसका जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى سَمْعِهٖ | وَّخَتَمَ | عَلٰى عِلْمٍ | اللّٰهُ | وَاَضَلَّهُ | هَوٰىهُ | اِلٰهَهٗ |
| उसके कान पर | और उसने मोहर लगा दी | इल्म के बावजूद | अल्लाह ने | और भटका दिया उसे | अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को | इलाह अपना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْۢ بَعْدِ | يَّهْدِيْهِ | فَمَنْ | غِشٰوَةً ط | عَلٰى بَصَرِهٖ | وَجَعَلَ | وَقَلْبِهٖ |
| बाद | हिदायत देगा उसे | तो कौन | एक पर्दा | उसकी आंख पर | और उसने डाल दिया | और उसके दिल पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَيَاتُنَا | اِلَّا | هِيَ | مَا | وَقَالُوْا | تَذَكَّرُوْنَ (23) | اَفَلَا | اللّٰهِ ط |
| ज़िंदगी हमारी | मगर | ये | नहीं है | और उन्होंने कहा | तुम नसीहत पकड़ते | क्या भला नहीं | अल्लाह के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | الدَّهْرُ ج | اِلَّا | يُهْلِكُنَآ | وَمَا | وَنَحْيَا | نَمُوْتُ | الدُّنْيَا |
| और नहीं | ज़माना | मगर | हलाक करता हमें | और नहीं | और हम जीते हैं | हम मरते हैं | दुनिया की |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِذَا | يَظُنُّوْنَ (24) | اِلَّا | هُمْ | اِنْ | مِنْ عِلْمٍ ج | بِذٰلِكَ | لَهُمْ |
| और जब | वो गुमान करते | मगर | वो | नहीं हैं | कोई इल्म | उसका | उन्हें |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تُتْلٰى | عَلَيْهِمْ | اٰيٰتُنَا | بَيِّنٰتٍ | مَّا | كَانَ | حُجَّتَهُمْ | اِلَّآ | اَنْ |
| पढ़ी जाती हैं | उन पर | आयात हमारी | वाज़ेह | नहीं | होती | हुज्जत उनकी | मगर | ये कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالُوا | ائْتُوْا | بِاٰبَآئِنَآ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿25﴾ | قُلِ | اللّٰهُ |
| वो कहते हैं | ले आओ | हमारे आबा ओ अजदाद को | अगर | हो तुम | सच्चे | कह दीजिए | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُحْيِيْكُمْ | ثُمَّ | يُمِيْتُكُمْ | ثُمَّ | يَجْمَعُكُمْ | اِلٰى يَوْمِ | الْقِيٰمَةِ |
| वो ज़िंदा करता है तुम्हें | फिर | वो मौत देता है तुम्हें | फिर | वो जमा करेगा तुम्हें | तरफ़ दिन | क़यामत के |

ع 3 5 19

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا رَيْبَ | فِيْهِ | وَلٰكِنَّ | اَكْثَرَ | النَّاسِ | لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿26﴾ ع | وَلِلّٰهِ | مُلْكُ |
| नहीं कोई शक | जिसमें | और लेकिन | अक्सर | लोग | नहीं वो इल्म रखते | और अल्लाह ही के लिए है | बादशाहत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ؕ | وَيَوْمَ | تَقُوْمُ | السَّاعَةُ | يَوْمَئِذٍ | يَّخْسَرُ |
| आसमानों | और ज़मीन की | और जिस दिन | क़ायम होगी | क़यामत | उस दिन | ख़सारा पाऐंगे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُبْطِلُوْنَ ﴿27﴾ | وَتَرٰى | كُلَّ | اُمَّةٍ | جَاثِيَةً ؕ ق | كُلُّ | اُمَّةٍ |
| बातिल परस्त | और आप देखेंगे | हर | उम्मत को | घुटनों के बल गिरी हुई | हर | उम्मत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُدْعٰٓى | اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ | اَلْيَوْمَ | تُجْزَوْنَ | مَا | كُنْتُمْ | تَعْمَلُوْنَ ﴿28﴾ |
| बुलाई जाएगी | तरफ़ अपनी किताब के | आज के दिन | तुम बदला दिए जाओगे | उसका जो | थे तुम | तुम अमल करते |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هٰذَا | كِتٰبُنَا | يَنْطِقُ | عَلَيْكُمْ | بِالْحَقِّ ؕ | اِنَّا | كُنَّا | نَسْتَنْسِخُ |
| ये है | किताब हमारी | जो बोलती है | तुम पर | साथ हक़ के | बेशक हम | थे हम | हम लिखवाते |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | كُنْتُمْ | تَعْمَلُوْنَ ﴿29﴾ | فَاَمَّا | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ |
| जो | थे तुम | तुम अमल करते | तो रहे | वो जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَيُدْخِلُهُمْ | رَبُّهُمْ | فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ | ذٰلِكَ | هُوَ | الْفَوْزُ | الْمُبِيْنُ ﴿30﴾ |
| तो दाख़िल करेगा उन्हें | रब उनका | अपनी रहमत में | ये है | वो ही | कामयाबी | वाज़ेह |

| وَاَمَّا | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا قف | اَفَلَمْ | تَكُنْ | اٰيٰتِيْ | تُتْلٰى | عَلَيْكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और रहे | वो जिन्होंने | कुफ़्र किया | क्या फिर ना | थीं | आयात मेरी | वो पढ़ी जातीं | तुम पर |

| فَاسْتَكْبَرْتُمْ | وَكُنْتُمْ | قَوْمًا | مُّجْرِمِيْنَ (31) | وَاِذَا | قِيْلَ | اِنَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो तकब्बुर किया तुमने | और थे तुम | क़ौम | मुजरिम | और जब | कहा गया | बेशक |

| وَعْدَ | اللّٰهِ | حَقٌّ | وَّالسَّاعَةُ | لَا رَيْبَ | فِيْهَا | قُلْتُمْ | مَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वादा | अल्लाह का | सच्चा है | और क़यामत | नहीं कोई शक | उसमें | कहा तुमने | नहीं |

| نَدْرِيْ | مَا | السَّاعَةُ لا | اِنْ | نَّظُنُّ | اِلَّا | ظَنًّا | وَّمَا | نَحْنُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हम जानते | क्या है | क़यामत | नहीं | हम समझते | मगर | एक गुमान ही | और नहीं हैं | हम |

| بِمُسْتَيْقِنِيْنَ (32) | وَبَدَا | لَهُمْ | سَيِّاٰتُ | مَا | عَمِلُوْا | وَحَاقَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यक़ीन करने वाले | और ज़ाहिर हो जाएंगी | उनके लिए | बुराईयां | उनकी जो | उन्होंने अमल किए | और घेर लेगा |

| بِهِمْ | مَّا | كَانُوْا | بِهٖ | يَسْتَهْزِءُوْنَ (33) | وَقِيْلَ | الْيَوْمَ | نَنْسٰكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उन्हें | वो जो | थे वो | जिसका | वो मज़ाक़ उड़ाया करते | और कह दिया जाएगा | आज | हम भुला देंगे तुम्हें |

| كَمَا | نَسِيْتُمْ | لِقَآءَ | يَوْمِكُمْ هٰذَا | وَمَاْوٰىكُمُ | النَّارُ | وَمَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जैसा कि | भुला दिया तुमने | मुलाक़ात को | अपने इस दिन की | और ठिकाना तुम्हारा | आग है | और नहीं |

| لَكُمْ | مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (34) | ذٰلِكُمْ | بِاَنَّكُمُ | اتَّخَذْتُمْ | اٰيٰتِ |
|---|---|---|---|---|---|
| तुम्हारे लिए | मददगारों में से कोई | ये बात | बवजह इसके कि तुम | बना लिया तुमने | आयात को |

| اللّٰهِ | هُزُوًا | وَّغَرَّتْكُمُ | الْحَيٰوةُ | الدُّنْيَا ج | فَالْيَوْمَ | لَا يُخْرَجُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह की | मज़ाक़ | और धोखा दिया तुम्हें | ज़िंदगी ने | दुनिया की | तो आज | ना वो निकाले जाएंगे |

| مِنْهَا | وَلَا | هُمْ | يُسْتَعْتَبُوْنَ (35) | فَلِلّٰهِ | الْحَمْدُ | رَبِّ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उससे | और ना | वो | वो उज़्र क़ुबूल किए जाएंगे | पस अल्लाह ही के लिए है | सब तारीफ़ | जो रब है |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوٰتِ | وَ رَبِّ | الْاَرْضِ | رَبِّ | الْعٰلَمِيْنَ ﴿36﴾ | وَ لَهُ |
| आसमानों का | और रब है | ज़मीन का | जो रब है | तमाम जहानों का | और उसी के लिए है |

ع 4 11 20

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْكِبْرِيَآءُ | فِي السَّمٰوٰتِ | وَ الْاَرْضِ ۚ | وَ هُوَ | الْعَزِيْزُ | الْحَكِيْمُ ﴿37﴾ ع |
| बड़ाई | आसमानों में | और ज़मीन में | और वो | बहुत ज़बरदस्त है | ख़ूब हिक्मत वाला है |

© AL HUDA INT RNA IONL WELFARE FOUNDATION